जुलाई-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक
जुलाई-२०२३

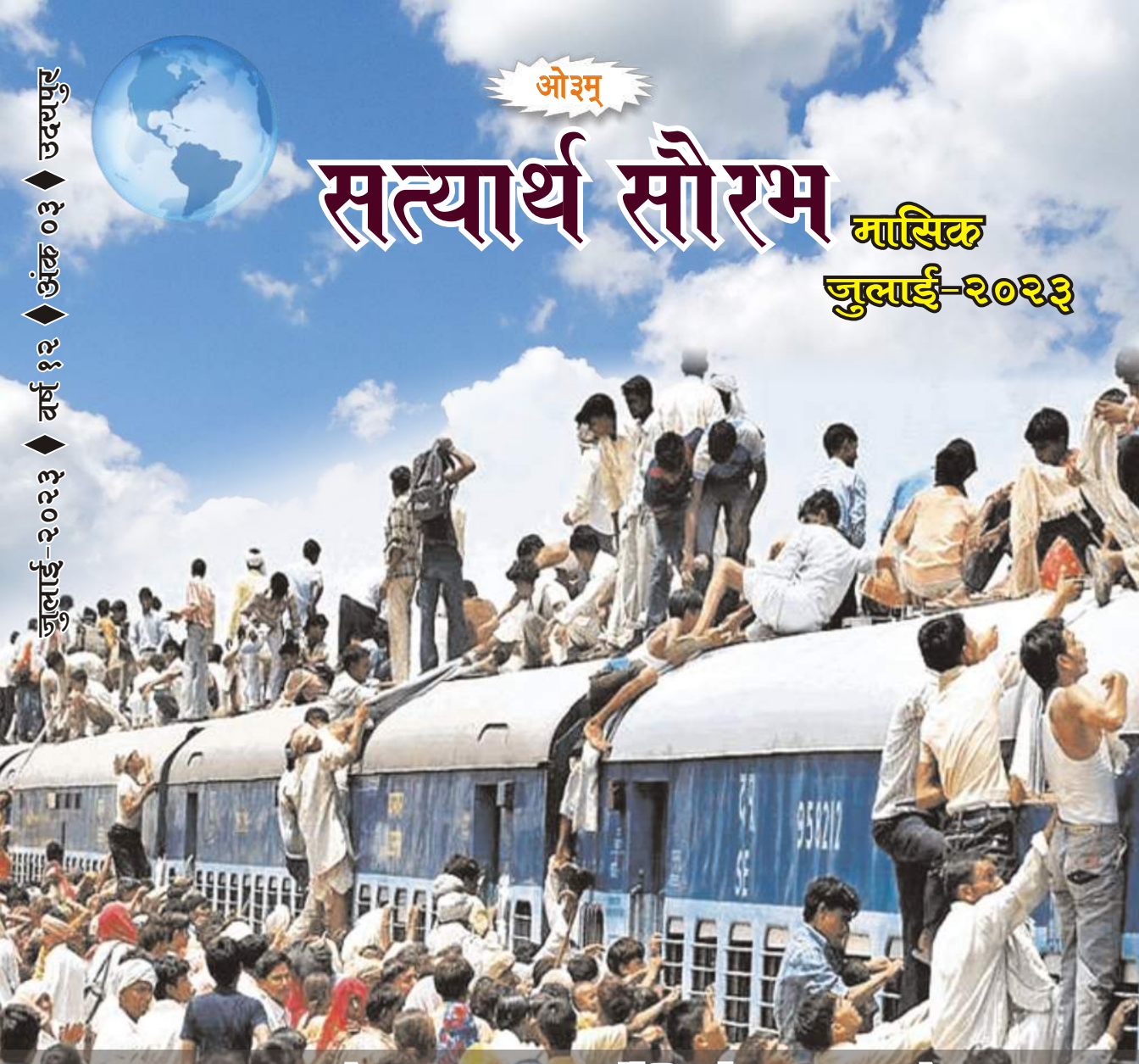

**साधन कम उपभोक्ता ज्यादा, करें नियंत्रण सुख हो ज्यादा।**
**ईश्वर का निर्देश यही है, ऋषि ने यह भी बतलाया॥**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ (१४१)

# हर समय स्वाद ही स्वाद

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित


न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ

**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**

अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**

भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग ( ग्राफिक्स डिजाईनर )**

नवनीत आर्य ( मो. 9314535379 )

**व्यवस्थापक**

भँवर लाल गर्ग


| सहयोग ◆ | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1250 |
| आजीवन | - 1500 रु. | $ 300 |
| पंचवर्षीय | - 600 रु. | $ 125 |
| वार्षिक | - 150 रु. | $ 30 |
| एक प्रति | - 15 रु. | $ 10 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२४
श्रावण कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत् २०८०
दयानन्दाब्द १९९


सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के है। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।



**July - 2023**



विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 3000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |


## समाचार ↓ १४


| | |
|---|---|
| ०४ | वेद सुधा |
| ०६ | सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२३ |
| ०७ | सत्यार्थ मित्र बनें |
| १५ | राजीव गुलाटी का मिला साथ |
| १७ | एक पन्थ दो काज |
| १८ | बेटी ने पिता की इच्छा पूरी की |
| २३ | वेद ही पूर्ण ज्ञान का भण्डार है |
| २६ | आर्यसमाज और ईश्वर |
| २८ | स्वास्थ्य- वर्षा ऋतु |
| २९ | कथा सरित- कहानी दयानन्द की |



स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १२ | अंक -०३ | मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com



स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

# वेद सुधा

## हम मेधावी बनें

**ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।**
**तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।** -यजुर्वेद ३२/१४

हे ज्ञानरूप परमेश्वर! जिस मेधा (बुद्धि) की उपासना हमारे पितर और विद्वानों ने की है, उस मेधा से हमें भी अलंकृत करो। बुद्धि विद्या से श्रेष्ठ है, इसलिये कहा है

**बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धि कुतो बलम्।**

बुद्धि में ही बल है, बुद्धिहीन के पास बल कहाँ? पंचतन्त्र में बुद्धि की प्रशंसा में कई ज्ञानवर्धक कथाएँ हैं, जो बुद्धि की श्रेष्ठता बताती हैं। हम प्रार्थना करते हैं, हमें उत्कृष्ट बुद्धि मिले। हम सद्बुद्धि पाकर ओजस्वी, तेजस्वी, और वर्चस्वी बनें।

महर्षि व्यास कहते हैं- पशुपालक की तरह लाठी लेकर देवता रक्षा नहीं करते, वे जिसकी रक्षा करना चाहते हैं, उसे सद्बुद्धि से समायुक्त कर देते हैं।

नैषधीय चरित में कवि कहते हैं- देवता प्रसन्न होकर और कुछ नहीं देते, बस सद्बुद्धि देते हैं।

गायत्री मन्त्र में है- **धियो यो नः प्रचोदयात्।** प्रभु हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करो ।

गीता में कहा है-

**तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।**
**ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।** -श्रीमद्भगवद्गीता १०/१०

अर्थात् सतत युक्त होकर प्रीतिपूर्वक भजन करने वालों को बुद्धियोग प्राप्त होता है, उस बुद्धियोग से उन्हें प्रभु की प्राप्ति होती है ।

इस मेधा बुद्धि Wisdom, की प्राप्ति केवल ईश्वर से ही सम्भव है। पिता अपने पुत्र को धन, सम्पत्ति, अधिकार सब कुछ सौंप सकता है, किन्तु अपनी मेधा या प्रतिभा का दान वह अपनी सन्तान को भी नहीं दे सकता। यदि ऐसा होता तो महापुरुषों की संतति मेधा, बुद्धिविहीन नहीं होती। वैदिक मन्त्रों में मेधा के लिये बार-बार प्रभु से प्रार्थना की गई है। मानव का स्वाभाविक ज्ञान बहुत ही सीमित है। वह अपने जीवन व्यवहार की बहुत सी बातें अपने माता-पिता, गुरुजनों और सहयोगियों से सीखता है। आदिकाल में मानव ने यह व्यवहार किससे सीखा होगा? महर्षि पाणिनी इस प्रश्न का उत्तर देते हैं 'जब मानव इस पृथ्वी पर आविर्भूत हुआ तो उसके पथ

प्रदर्शनार्थ सृष्टि के आदि में परम गुरु परमात्मा ने अग्नि ऋषि के अन्तःकरण में ऋग्वेद का, वायु ऋषि के अंतःकरण में यजुर्वेद का, आदित्य ऋषि के अंतःकरण में सामवेद का और अंगिरा ऋषि के अंतःकरण में अथर्ववेद का प्रकाश किया। वेद ईश्वरकृत हैं, वेद किसी मनुष्य ने नहीं बनाए। परमपिता परमात्मा ने जब सृष्टि रची तब मनष्युमात्र के हित के लिये इन चार ऋषियों के हृदय में आत्मा को प्रेरणा मिली। यही ज्ञान आदिकाल में एक दूसरे से सुन-सुन

कर याद करने की परम्परा चलती रही, इसलिये वेद को श्रुति भी कहते हैं।

ऋग्वेद में ब्रह्मज्ञान है, इसमें तिनके से लेकर ब्रह्मपर्यंत सभी प्रकार का ज्ञान भरा पड़ा है। ऋग्वेद में २० मण्डल, १०२८ सूक्त और १०५२२ मन्त्र हैं। जिनमें पृथ्वी, जगत्, भूगोल, खगोल और समस्त पदार्थों के गुण और गुणी का बोध कराया गया है। इसके उपवेद आयुर्वेद में चरक एवं सुश्रुत का ज्ञान है। यजुर्वेद कर्मप्रधान है इसमें ४० अध्याय और १९७५ मन्त्र संख्या है। इसके उपवेद धनुर्वेद में शस्त्र विद्या, राजनीति, व्यवसाय, कृषि, पारिवारिक व्यवस्था को बताया गया है। सामवेद यह उपासना का वेद है। इसमें पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक दो भाग हैं तथा १८७५ मन्त्र हैं। इसके उपवेद गान्धर्ववेद में सामगान एवं संगीत विद्या, स्वर-ताल और राग-रागिनी का वर्णन है। अथर्ववेद विज्ञान है, इसमें काण्ड २० हैं, १११ अनुवाक, ७३१ सूक्त और ५९७७ मन्त्र हैं। इसमें कृषि, वाणिज्य, राजनीति, अर्थनीति और समाज शास्त्र आदि तत्वों का प्रतिपादन है। इसका उपवेद अर्थवेद है। वेदों का सम्यक् ज्ञान पाने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष और कौटिलीय शास्त्र आदि के अकूत ज्ञान के भंडार को समझने के लिये वेदों में बारम्बार प्रार्थना की गई है। उपनिषद् में एक कथा है-

महर्षि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु कई वर्षों तक विद्यार्जन कर जब अपने घर लौटे, तो पिता उद्दालक ने पूछा- पुत्र! तुमने सारी विद्याएँ तो सीख लीं, लेकिन क्या ब्रह्म को जाना, समझ लिया? उसे जाने समझे बिना सारी विद्याएँ व्यर्थ हैं। श्वेतकेतु ने कहा- मेरे आचार्य को जितनी विद्या आती थी, उन्होंने मुझे सिखा दी है, लेकिन ब्रह्मज्ञान के विषय में मैं नहीं जानता। पिता ने कहा- बाहर जाओ और पेड़ से एक फल तोड़ कर लाओ। वह ले आया तो उसे फल काटने के लिये कहा। श्वेतकेतु ने फल काटा तो उसमें बीज ही बीज भरे थे। पिता ने कहा इसके प्रत्येक बीज में इतना ही बड़ा वृक्ष छिपा होना चाहिये, तुम बीज को काटो। श्वेतकेतु ने बीज काटा लेकिन उसमें कुछ नही, शून्य ही था। जो नहीं दिखाई दे रहा था, जो अदृश्य था, वह विशाल वृक्ष इसी बीज से पैदा हुआ है। इसी तरह हम भी ऐसे ही शून्य से आए हैं, वह जो दिखाई नहीं दे रहा है, उसी से हमारा जन्म हुआ है। श्वेतकेतु ने पूछा- क्या मैं भी उसी महाशून्य से आया हूँ? इस प्रश्न के उत्तर में उपनिषद् का महावचन है- **तत्त्वमसि श्वेतकेतु।** तू भी वहीं से आया है। यही ब्रह्मज्ञान है। यह ब्रह्मज्ञान वह प्रकाश है जो मनुष्य के मन और मस्तिष्क का अंधकार समाप्त कर देता है।

सृष्टि के आदि में मानव के कल्याण और मार्गदर्शन के लिये प्रभु ने जो बौद्धिक ज्ञान का प्रकाश दिया है, उसी का नाम वेद है। वेद अर्थात् ज्ञान, जो ईश्वरीय प्रेरणा का फल है। वेद में ज्ञान और भाषा दोनों हैं, वेद मन्त्रों में जहाँ सर्वमंगल हेतु प्रार्थनाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर- स्वयं यजस्व, स्वयं जुषस्व कहकर प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ का भी आदेश दिया है। सच्ची प्रार्थना के अनुरूप पुरुषार्थ आपको जीवन के चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर करेगा।

**यत्र सोमः सूयते, यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभितत् पवन्ते।**

अर्थात्- जहाँ पुरुषार्थ है और जहाँ यज्ञ में घी की धारा की तरह प्रार्थना उपासना दोनों हैं, वहाँ विजय और सफलता दोनों निश्चित ही होंगी। हमारी बुद्धि जब इस ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित हो जाती है, तब हम समझ पाते हैं कि- **वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।** अर्थात् वेद ही सब धर्मों का मूल है।

**ईंटें चुन-चुन घर बनाया, लोग कहें घर मेरा,**
**ना घर मेरा, ना घर तेरा, ये चिड़िया रैन बसेरा।**

इन चार दिनों का सदुपयोग कुशाग्र बुद्धि से ही सम्भव है। आज मनुष्य को अंतः प्रवृत्ति और बाह्य प्रवृत्ति पर एक साथ विजय पानी है और इस के लिये विज्ञान के साथ धार्मिक ज्ञान दोनों का विकास आवश्यक है अतः हमें

एक साथ ही सच्चा वैज्ञानिक और सच्चा आध्यात्मिक बनना है।

डॉ. मुहम्मद इकबाल ने भारतीय संस्कृति के लिये कहा था-

**'यूनानो मिस्रो रूमां, सब मिट गए जहाँ से, अब तक मगर है बाकी, नामोनिशां हमारा।**
**कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा।।'**

यह कुछ बात जो हमारे पास है, वह यही आध्यात्मिक ज्ञान (DIVINE KNOWLEDGE) है। नयी पीढ़ी के बच्चों की बुद्धि प्रखर हो, उसका विकास हो, इसके लिये हमें भी सतत् प्रयत्नशील होना होगा। युगों से प्रवाहित वैदिक ज्ञान की गंगा को सम्पूर्ण विश्व में प्रवाहित करना होगा।

लेखिका- डॉ. रोचना सुभाषचन्द्र भारती
साभार- अमृत मन्थन

श्रीमती शारदा गुप्ता
3 JULY

श्री अशोक आर्य
13 JULY

श्री मोती लाल आर्य
20 JULY

डॉ. अमृतलाल तापड़िया
22 JULY

श्री सुखदेव चन्द सोनी
23 JULY

श्री मिठाई लाल सिंह
30 JULY

**उपर्युक्त सभी न्यासी बन्धुओं को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास, NMCC एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।**

पूरा नाम-
चलभाष-

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०३/२३

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( चतुर्दश समुल्लास पर आधारित )- पुरस्कार प्राप्त करिये

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | न १ | | १ क्त | | २ अ | २ | २ ब | ३ | शी २ |
| | ३ | स ३ | ३ | न ३ | | | ४ ट | ४ | |
| ५ | हा ५ | ५ | | ६ | ता ६ | ६ | | ७ | हीं ७ |

**संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. कुरान किस दोष का भण्डार है?
२. कुरान महर्षि दयानन्द जी के अनुसार किस देश के व्यक्ति ने लिखी हैं?
३. कुरान में किसे किले के समान बुर्जों वाला कहा है?
४. कुरान में खुदा के किस जानवर की बात कही है जिसकी रक्षा करने तथा पानी पिलाने के निर्देश हैं?
५. कुरान के अनुसार एक समय ऐसा आयेगा जब कौनसी जड़ वस्तु भी चलायी जायेगी?
६. खुदा सारी पलटन को एकत्र कर किसे पकड़ ले तो उसका राज्य निष्कंटक हो जाय?
७. क्या मुस्लिम मत की बातें अथर्ववेद में मिलती हैं?

**''विस्तृत नियम पृष्ठ १४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''**
**कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०२३**

# सत्यार्थ मित्र बनें

## न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता तथा प्रेरणा कक्ष का निर्माण भाई श्री हरि वार्ष्णेय जी (वैकूवर–कनाडा) के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।** निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

**आर्य समाज, हिरणमगरी-उदयपुर ने सत्यार्थ मित्र की आजीवन सदस्यता रुपये 51000/- (इक्कावन हजार) ग्रहण की है। हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।**

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण :

**AC. No. : 310102010041518,**
**IFSC CODE- UBIN 0531014,**
**MICR CODE- 313026001**

में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

डॉ. हरीश आर्य
कोटपुतली

मीमांसा सूद
कंडाघाट (हि.प्र.)

श्रीमती विमला सूद
कंडाघाट (हि.प्र.)

श्री सत्येन्द्र कुमार आर्य
सिलीगुडी

श्री शिव नारायण गुप्ता
हरदोई (उ.प्र.)

श्रीमती स्नेहलता खड़ूर
देहरादून

श्री रविन्द्र कुमार आर्य
सिलीगुडी

श्री मयंक सूद
कंडाघाट (हि.प्र.)

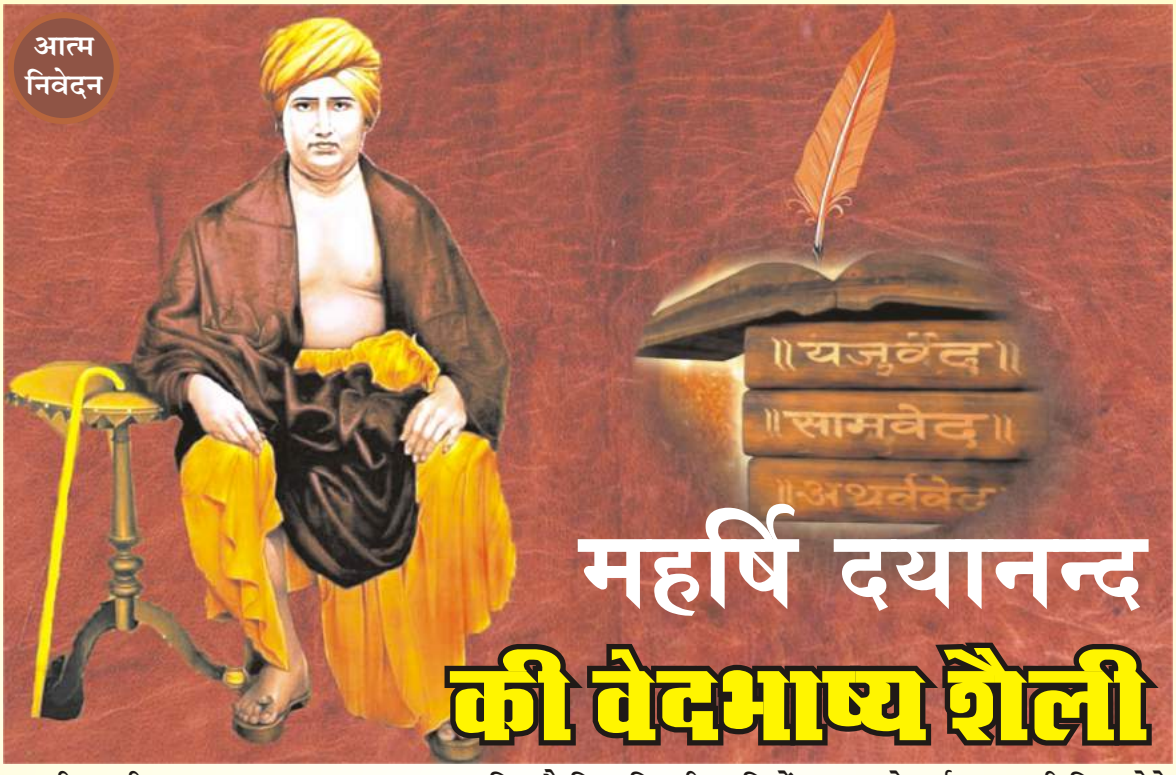

# महर्षि दयानन्द की वेदभाष्य शैली

भारतीय मनीषा का यह मानना अत्यन्त स्वाभाविक है कि सृष्टि की आदि में मनुष्य को सर्व प्रकार की शिक्षा देने हेतु, सृष्टि के पदार्थों का कैसे उपयोग करें, आपस में कैसे व्यवहार करें, पर्यावरण को कैसे पाक साफ रखें, इत्यादि-इत्यादि समस्त ऐसे ज्ञान का भंडार उसे चाहिए ही था। क्योंकि बिना सीखे वह कुछ सीख नहीं सकता, उसे नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है ही और वह केवल परमपिता परमात्मा द्वारा सृष्टि की आदि में दिया जा सकता है। ईश्वर ने यह कृपा की, यह ज्ञान दिया और इसी ज्ञान का नाम वेद है।

क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसलिए उसमें कोई कमी नहीं हो सकती, कोई भूल नहीं हो सकती, कोई अप्रासंगिक बात नहीं हो सकती, सृष्टिक्रम के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकता, प्राणिमात्र के प्रति अन्याय की बात नहीं हो सकती, पक्षपात का लेश भी नहीं हो सकता। इसी प्रकार कोई अनैतिक, अश्लील अथवा अपवित्र बात भी नहीं हो सकती।

इस दृष्टि से देखें तो तथ्य यह है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान की कसौटी पर केवल तभी खरे उतरते हैं जब विभिन्न भारतीय आचार्यों के किए गए भाष्य तथा विदेशी विद्वानों के किए भाष्यों को छोड़कर हम केवल महर्षि दयानन्द के भाष्य का अनुसरण करते हैं क्योंकि दयानन्द के अतिरिक्त सभी के भाष्यों में न्यूनाधिक वे दोष मिलते हैं जो हमने ऊपर लिखे हैं।

जैसा कि महर्षि दयानन्द ने वेद भाष्य करने से पूर्व ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में अपने भाष्य करने की शैली को दर्शाते हुए यह स्पष्ट किया है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और वेद में वे समस्त विद्याएँ जो कि मनुष्य के लिए आवश्यक हैं बीज रुप में उपस्थित हैं, उसकी आज दृढ़ स्थापना आवश्यक है। क्योंकि आज वेदों के विद्वान् कहाने वाले व्यक्ति भी प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप में अथवा जाने अनजाने में वेदों को अपौरुषेय मानते हुए भी अपनी प्रतिज्ञा से स्खलित पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ- आचार्य सायण

महर्षि दयानन्द अपने वेद भाष्य को पूर्ण नहीं कर पाए। वह चाहते थे कि वे चारों वेदों का भाष्य कर पाएँ और

उन्होंने कहा भी कि अगर ऐसा हो गया तो सूर्य के समान प्रकाश हो जाएगा, परन्तु मानवता विरोधी षड्यंत्रकारियों के विष देने के कारण १८८३ की दीपावली को महर्षि दयानन्द का जीवन समाप्त हो गया। वे तब तक यजुर्वेद का पूर्ण भाष्य और ऋग्वेद के सातवें मण्डल के ६१वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक ही भाष्य कर पाए थे जो कि आज भी आर्य विद्वानों की दृष्टि में निर्विवाद हैं। परन्तु इसके पश्चात् वैदिक (आर्यसमाजी) विद्वानों ने जो भाष्य किए हैं, (वे मूर्धन्य विद्वान् थे इसमें कोई विवाद का अवकाश न होते हुए भी) उनमें एक तो एक्य भाव का अभाव है और कहीं-कहीं किन्हीं किन्हीं मंत्रों के ऐसे भाष्य हैं जिनमें हमारे द्वारा इस लेख के प्रारम्भ में लिखे गए दोष पाये जाते हैं। इनके आधार पर वेदों में दोष मान प्रसन्न होने वालों की कमी नहीं है, अतः हम समझते हैं कि भाष्यकारों के अर्थों का गंभीर विश्लेषण, उन पर गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता थी और है।

अन्यों ने भी ऐसे भाष्य किये हैं उससे तो हमें आक्षेपकर्त्ता के समक्ष यह कहने का अवकाश मिल जाता है कि यह महर्षि दयानन्द जी की शैली के अनुरूप नहीं हैं, परन्तु जब आर्य विद्वान् भी ऐसा ही भाष्य करेंगे अथवा ऐसे भाष्य का समर्थन करेंगे तब आर्यजन क्या उत्तर देंगे?

यहाँ कतिपय विद्वानों का मानना है कि ये मन्त्र गृहस्थ के कर्त्तव्यों के निर्देश स्वरूप हैं, इसे स्वीकारते हुए भी कहूँगा कि भाष्यों की भाषा मर्यादाओं का उल्लंघन करती प्रतीत होती है जो वेद की भाषा नहीं हो सकती। यह हम क्यों कह रहे हैं? सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में गर्भाधान प्रक्रिया के संदर्भ में ऋषि ने कुछ निर्देश दिए हैं, वह उन्हीं के द्वारा किए एक वेद मन्त्र यजुर्वेद १६/८८ का अर्थ है। वहाँ निर्देश है, भाषा सन्तुलित है। देखिए- स्त्री और पुरुष गर्भाधान के समय एक दूसरे के अंगों को अपने अंगों से आच्छादित करके मुख से मुख, नेत्रों से नेत्र, मन से मन और शरीर से शरीर सटाकर गर्भाधान करें। जिससे कि कुरूप अपना टेढ़े-मेढ़े अंगों वाला संतान न जन्मे।

अतः तत्-तत् मन्त्रों के ऐसे ही अर्थ (अनर्थ) हैं, ऐसा मानना सम्भवतः उचित नहीं। हमें पूर्ण विश्वास है कि महर्षि यदि इनका भाष्य कर पाते तो वह ऐसा नहीं होता। यह हम इस आधार पर कह रहे हैं कि ऐसे अनेक मन्त्र हैं जिनके महीधर, सायण, ग्रिफिथ आदि ने अत्यन्त अश्लील अर्थ किये हैं परन्तु ऋषिवर ने उनके अत्यन्त सुन्दर सार्थक और प्रेरक अर्थ किये हैं। उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद १/१२६ के छठे और सातवें मंत्र का सायणाचार्य, स्कंदस्वामी आदि ने राजा भावयव्य और उनकी पत्नी रोमशा के मध्य सहवास की इच्छा को लेकर अत्यन्त अश्लील संवाद का वर्णन मिलता है। पाठक सम्बन्धित भाष्यकारों के भाष्य में देख सकते हैं। वहीं इसी मंत्र का अर्थ स्वामी दयानन्द सुन्दर एवं शिक्षाप्रद रूप से इस प्रकार से करते हैं। स्वामी जी इस मंत्र में राजा (जो उत्तम गुण सिखा सके और सब लोग जिसे ग्रहण करके उस पर सुगमता से चल सके) के प्रजा के प्रति कर्तव्य का वर्णन करते हुए व्यवहारशील एवं प्रयत्नशः प्रजा को सैकड़ों प्रकार के भोज्य पदार्थ दे सकने वाली राजनीति करने का उपदेश है, ऐसा कहते हैं।

इससे अगले मंत्र में राजा की भाँति उसकी पत्नी विदुषी और राजनीति में निपुण होने तथा प्रजा विशेष रूप से स्त्रियों का न्याय करने में राजा का सहयोगी बनने का सन्देश है।

अब पाठक स्वयं विचार कर सकते हैं कि सत्य तो यही है कि वेद में किसी प्रकार की अश्लीलता वा अनैतिकता नहीं है।

यह सही है कि अनेक आर्य विद्वानों ने पुस्तकें लिखकर वेदों में अश्लीलता के आरोप को गलत सिद्ध किया है परन्तु वे अश्लील भाष्य तो अभी भी आर्य विद्वानों के साथ चिपके हुए हैं। उनको यूँ ही छोड़ कर आक्षेपकर्त्ताओं को निमंत्रित करते रहना उचित है अथवा उनसे पीछा छुड़ाकर अथवा उनके सही भाष्य प्रस्तुत करने का उद्योग श्रेयस्कर है, यह वो यक्ष प्रश्न है जिस पर आज आर्य विद्वानों और पदाधिकारियों को शीघ्रातिशीघ्र विचार कर,

निर्णय लेना चाहिए। यह वैसा ही प्रकरण है जैसा पुराणों इत्यादि को लेकर पौराणिकों का है। वे प्रयत्न करते हैं कि पुराणों के अश्लील असम्भव प्रकरणों की अन्य व्याख्या कर सकें, परन्तु ऐसा हो नहीं पाता। उनके द्वारा की गयी खींचतान स्पष्ट हो जाती है। इसीलिए महर्षि ने इन्हें त्याग देने को कहा था। क्या त्यागने की यही बात आर्य विद्वानों के उन अश्लील भाष्यों के साथ सम्भव है? यह चिन्त्य है जिस पर आर्य विद्वानों को निर्णय लेना चाहिए।

अब प्रश्न उठता है कि आर्यसमाज के ऐसे मूर्धन्य विद्वानों ने आखिर ऐसे भाष्य क्यों किये? उनका पथ प्रदर्शन तो महर्षि स्वयं कर चुके थे, सायण और महीधर के भाष्यों को अमान्य करके। फिर क्या कारण बना कि हमने महर्षि को छोड़ महीधर का पल्ला पकड़ लिया?

क्या सचमुच उनका अर्थ उसके अतिरिक्त हो ही नहीं सकता था? कुछ विद्वान् इसका सकारात्मक उत्तर देंगे और कुछ नकारात्मक। जो विद्वान् यह मानते हैं कि इन इन मन्त्रों के भाष्य में कहीं न कहीं हमारे विद्वानों से त्रुटि हुयी है उन्हें इनका निराकरण करने आगे आना चाहिए, जहाँ तक सम्भव हो पूर्व विद्वानों की आलोचना व निन्दा से बचते हुए। सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त विद्वानों का एक पैनल ऐसे प्रयासों की निष्पक्ष समीक्षा करे। महान् आशय को लेकर काम हो तो कुछ असम्भव नहीं है। पर हम सभी को अपने अहं और अन्य के प्रति उपेक्षा भाव को किनारे रखना होगा।

आज का युग इण्टरनेट का युग है। वेद और वेद के भाष्य सब कुछ सहज उपलब्ध हैं, जो कि स्वागत योग्य है। परन्तु विभिन्न मतों के लोग जब केवल इस अभिलाषा से कि केवल वे और उनकी मान्यताएँ ही समस्त संसार में साम्राज्य स्थापित करें, जानबूझकर के इन मंत्रों और इनके भाष्यों को लेकर के इनके हिंसा परक, अश्लील अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं और इसका आधार वे वैदिक विद्वानों के भाष्य को बना रहे हैं, तो यह चिन्ता का विषय है, क्योंकि आज का नवयुवक जब इनको पढ़ेगा तो फिर वेद के प्रति उसकी रही सही श्रद्धा भी समाप्त हो जाएगी।

अतः अत्यन्त आवश्यक है कि इनका सम्यक् उत्तर वैदिक विद्वानों के द्वारा दिया जाना चाहिए। परन्तु ऊपर जिन पुस्तकों की ओर संकेत किया उन प्रयासों के अतिरिक्त विडम्बना है कि इण्टरनेट पर उपलब्ध ऐसी शरारत के शमन हेतु ऐसा कोई प्रयास किसी आर्य विद्वान् के द्वारा नहीं किया जा रहा अथवा कम से कम हमारे देखने में नहीं आया ।

लगभग तीन चार वर्ष पूर्व हमने ऐसे कई लेखों, जिनका कि लेखन इन मत वाले पक्षपात युक्त क्षुद्राशय लोगों द्वारा किया गया था उनका एक संक्षिप्त संकलन करके आर्य समाज की शीर्ष संस्था के प्रधान जी आदरणीय सुरेश चन्द जी आर्य को दिया। उन्होंने कतिपय विद्वानों के पास उत्तर के लिए उनको भेजा। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस सन्दर्भ में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। इसके परिणाम कितने भयावह हो सकते हैं यह आसानी से समझा जा सकता है। हमारे विचार में यह उपेक्षा उचित नहीं। उक्त प्रकार के एक लेखक ने अपने लेख में जो भूमिका लिखी है उसका अंश यह समझाने में सफल होगा कि वेद के समक्ष कितनी भयावह चुनौती है और इसका उत्तर केवल वेदों वाले ऋषि के शिष्य ही दे सकते हैं।

Vedas are terror manual which turns human into savages. Many tribes were destroyed as a result of the violent passages in Vedas. As per Vedas you must kill a person who rejects Vedas, who hates Vedas and Ishwar, who does not worship, who does not make offerings to ishwar, who insults god [Blasphemy] one who oppresses a Brahmin etc. There are several passages in Vedas which calls for

death of disbelievers. **I am mostly using Arya Samaji translations of Satya Prakash Saraswati, Satyakam Vidyalankar, Devi Chand\Vaidyanath Shastri, Kshemkaran Das Trivedi, Swami Dayanand Saraswati, Shripad Damodar Satvalekar and orthor translations of Swami Karpatri and Shri Ram Sharma Acharya (Gayatri Parivar) and I will be using Griffith's translation as well followed by Hindi translation of Hindu scholars.**

हम वेद क्या, संस्कृत और व्याकरण के ज्ञान से भी वंचित हैं फिर भी सत्यार्थ सौरभ के अक्टूबर २०१९ अंक में हमने महर्षि दयानन्द जी के भाष्यों पर इन लोगों ने जो टिप्पणी की, उनका स्पष्टीकरण देने का प्रयास किया। (तहाफुजे इंसानियत समझे कुछ इंसानियत)। जबकि यह कार्य आर्य समाज के विद्वानों द्वारा किया जाता तो श्रेष्ठ होता।

वेद महर्षि दयानन्द जी के समस्त कृतित्व का केन्द्र हैं इसीलिए उनको वेदों वाला ऋषि कहा जाता है और इसीलिए उनका नारा 'वेदों की ओर लौटो' प्रसिद्ध है। वेद के सही अर्थों को जनभाषा में सामान्यजन तक पहुँचाने का जो अनूठा, अद्भुत, और अभूतपूर्व कार्य महर्षि दयानन्द ने किया उसके लिए उनका स्थान सर्वोपरि निर्धारित हो जाता है परन्तु उनके अवशिष्ट कार्य को आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वानों ने जब किया तो यद्यपि उसके प्रति उनके लिए श्रद्धावनत होकर के निश्चित रूप से नमन किया जा सकता है, परन्तु कहीं-कहीं उनके भाष्यों में ऐसे अर्थ हुए हैं जिनके बारे में प्रश्न करने पर एक सामान्य आर्य शर्म से आँखें झुका लेगा, जब ऐसी स्थिति उसके सामने उपस्थित होगी। अत्यन्त आवश्यक था कि समय रहते आर्य विद्वान् आगे आते अथवा शीर्ष संस्था इस बात की व्यवस्था करती कि ऐसे सभी बिन्दुओं का चयन करके उनका सम्यक् समाधान किया जाता। अभी भी इस ओर तात्कालिक कार्य की अवश्यकता है। इससे पूर्व कि ऐसी सामग्री विपुल मात्रा में युवा पीढ़ी के समक्ष आए इनका समाधान होना अत्यावश्यक है, बल्कि आर्य समाज के समक्ष सर्व प्रमुख विषय है ऐसी हमारी विनम्र सम्मति है। ऋषिवर के २००वें जन्मदिन के अवसर पर यह कार्य भी श्रद्धांजलि स्वरूप होगा।

अभी कल एक लेख श्रद्धेय वैदिक वैज्ञानिक विद्वान् आचार्य अग्निव्रत जी का हमारे पढ़ने में आया, जिसे उन्होंने सीमित लोगों तक भेजा है, ताकि उसमें आर्य विद्वानों की जिस चूक का उल्लेख किया गया है, वह वेदों पर आक्रमण करने वाले लोगों के संज्ञान में न आवे। जितनी हमारी समझ है उस लेख को पढ़कर अगर उनके वही अर्थ लिए जाएँ जैसे कि पूर्व आचार्यों ने किए हैं, तो वेद पर अश्लीलता का आरोप आता ही है और सामान्य जन के इस प्रश्न का उत्तर देना भी सम्भव नहीं होगा। इसीलिए हम भी सत्यार्थ सौरभ में आचार्य जी का पूरा लेख नहीं छाप रहे, परन्तु उसी वेद मंत्र का अथवा उसका जो पद निरुक्त में प्राप्त है उसका आचार्य श्री अग्निव्रत जी द्वारा किया भाष्य यहाँ दे रहे हैं। आचार्य अग्निव्रत जी ने इस मन्त्र का आधिदैविक भाष्य भी किया है परन्तु पूर्व विद्वानों के द्वारा इसका आधिदैविक भाष्य नहीं किया है और उसे देने से यह लेख भी बहुत लम्बा हो जाएगा इस कारण हम उसे नहीं दे रहे हैं। जिन्हें पढ़ना है वे आचार्य अग्निव्रत जी के सोशल मीडिया पर देख सकते हैं।

इसके जो अर्थ पूर्व आर्य विद्वानों द्वारा किए गए हैं हम उन आचार्यों के भाष्य भी नहीं दे रहे, उनके द्वारा किया अर्थ सामान्य तौर पर उपलब्ध है, पाठक थोड़ा परिश्रम कर, देख सकते हैं।

जहाँ तक हमारा प्रश्न है, हमें आचार्य अग्निव्रत जी का भाष्य निरापद और सर्व प्रकार से संगत और उपयोगी जान पड़ा है। परन्तु वेदार्थ के सन्दर्भ में हमारी सम्मति का कोई महत्व नहीं क्योंकि हम इस के अधिकारी नहीं।

परन्तु हमारा विश्वास है कि हमारी तरह से ही आर्यजन यह जानना चाहेंगे कि क्या आचार्य अग्निव्रत जी का भाष्य सही है?

अतः क्या ही उत्तम हो कि आर्य समाज के विद्वान् आचार्य इस पर अपनी सहमति अथवा इसके दोष प्रकट करें। एक बार यह विचार करना तो हम अवश्य उचित मानते हैं कि श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक की यह जो भाष्य शैली है, क्या वह सुसंगत है और महर्षि दयानन्द सरस्वती की शैली के अनुसार है अथवा उससे विपरीत अपनी ओर से खींचतान करके अग्निव्रत जी ने ऐसा अर्थ किया है?

अगर विद्वानों के पुरुषार्थ से यह सामने आ सके तो श्री नैष्ठिक जी के कार्य का मूल्यांकन हो सकता है तथा आर्य जगत् भी व्यापक तौर पर समझ सकता है कि उनके मध्य का एक विद्वान् जो कार्य कर रहा है वह स्तुत्य है या उपेक्षणीय है। आचार्य जी ने जो लेख लिखा है उसका केवल वही अंश जो हम अपने लेखन के साथ देना चाहते हैं प्रस्तुत है।

आचार्य अग्निव्रत जी द्वारा त्रिविध भाष्य में से आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक भाष्य-

**त्रिः स्म माह्नः श्नथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि ।**

आधिभौतिक भाष्य-

**(उत, पुरूरवः)** [**उत अपि (नि. 1.6)**] व्यापक वैदुष्य से सम्पन्न अनेक शास्त्रों का उपदेश करने वाला विद्वान् राजा वा पति **(मा, अह्नः, त्रिः, वैतसेन, श्नथयः)** मुझ प्रजा वा पत्नी, जो उर्वशी रूप है अर्थात् व्यापक रूप से अपनी वाणी को वश में करके अपने राजा वा पति के स्वामित्व में रहती है, के त्रिविध दुःखों को अपने न्याय वा पुरुषार्थ के प्रकाश में अपने पराक्रम से नष्ट करने का प्रयास करता है अर्थात् उसे इन दुःखों से पीड़ित नहीं होने देता है। यहाँ तीन प्रकार का अर्थ है आधिभौतिक अर्थात् किसी अन्य प्राणी से प्राप्त दुःख, आध्यात्मिक अर्थात् शारीरिक व मानसिक रोग और आधिदैविक दुःख अर्थात् प्राकृतिक आपदाएँ। विद्वान् धर्मात्मा पुरुष (राजा वा पति) अपने धर्म से इन सबको दूर करने में समर्थ होता है।

यहाँ **'वैतस'** का निर्वचन करते हुए महर्षि यास्क लिखते हैं- **'वैतसो वितस्तं भवति'** अर्थात् जिसका तेज उचित अवसर पर अर्थात् किसी निमित्त के उपस्थित होने पर ही प्रकट होता है, अन्यथा शान्त वा अदृश्य रहता है। यह किसी भी तेजस्वी व्यक्ति के लिए ऐसा ही देखा जाता है। इसको हम इस उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं- किसी व्यक्ति का ज्ञान वा बल तब तक प्रकट नहीं हो सकता, जब तक वह उसका प्रयोग नहीं करता, उसी ज्ञान, बल व पराक्रम को यहाँ 'वैतस' कहा गया है। **(मे, अव्यत्यै, पृणासि, स्म)** इस पराक्रम से अनुकूल हुई प्रजा वा पत्नी को सभी प्रकार के सुखों से परिपूर्ण करता है। इसका अर्थ है कि जब राजा व पति का अपनी प्रजा वा पत्नी के मध्य पारस्परिक प्रेम व सहकार का सम्बन्ध होता है, तब वह राजा वा पति अपनी उस प्रजा वा पत्नी को सभी प्रकार के सुखों से भर देता है। **(अनु, ते, केतम्, आयम्)** ऐसी वह अनुकूल प्रजा पत्नी अपने राजा वा पति के निर्देशों वा परामर्श को निरन्तर प्राप्त करती रहती है और तदनुकूल व्यवहार करती रहती है। **(मे, वीर, तन्वः, तत्, राजा, आसीः)** [तनूः = आत्मा वै तनूः (श. ६-७-२-६, ७-३-१-२३)] वह प्रजा वा पत्नी अपने राजा वा पति से कहती है कि अपने आध्यात्मिक तेज व न्यायादि से प्रकाशित हे वीर राजन् वा पति ! आप हमारे आत्मा के समान हैं और हम आपका शरीर रूप हैं ।

**भावार्थ**- विद्वान् राजा अपनी प्रजा को तथा पति अपनी पत्नी को तीनों प्रकार के दुःखों से दूर करने का प्रयत्न करता रहता है। ऐसा व्यवहार करके राजा अपनी प्रजा तथा पति अपनी पत्नी को सर्वथा सर्वदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न करे। ऐसे सुखप्रद राजा वा पति के निर्देशों वा परामर्श को प्रजा वा पत्नी प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार

करती है तथा उस राजा वा पति को उसकी प्रजा वा पत्नी अपने आत्मा के समान प्रिय मानती है। यहाँ यह शिक्षा मिलती है कि राजा व प्रजा तथा पति वा पत्नी के मध्य कभी वैमनस्य, मतभेद वा कटुता का व्यवहार नहीं होना चाहिए, बल्कि इनके मध्य वही सम्बन्ध होना चाहिए, जो सम्बन्ध आत्मा व शरीर के मध्य होता है, जो कभी एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते। [वैतस का हीन अर्थ एवं उससे सम्बन्धित सभी निरुपण यहाँ अनुपस्थित हैं-सम्पादक]

**आध्यात्मिक भाष्य**

**(उत, पुरूरवः)** सृष्टि के आदि में वेद विद्या का व्यापक उपदेश देने वाले आचार्य वा परमेश्वर **(मा, अह्नः, त्रिः, वैतसेन, श्नथयः)** हमारी नियत प्रजा को अपने सदुपदेश वा उपासना के प्रकाश में **[वैतसो वितस्तं भवति]** दोषों को दूर करने की क्षमता के द्वारा नष्ट करे। आचार्य के सदुपदेश व परमेश्वर की उपासना में वह शक्ति होती है, जो अपने शिष्यों वा भक्तों के दोषों को नष्ट कर देती है। इसके लिए उन शिष्यों वा भक्तों को भी स्थिर वा नियत बुद्धि वा नियत वाणी वाला होना चाहिए। जिसकी बुद्धि व वाणी नियन्त्रित नहीं है, उसे न तो आचार्य और न परमात्मा ही दोषों वा पापों से बचा सकता है।

**(मे, अव्यत्यै, पृणासि, स्म)** जब शिष्य अपने आचार्य तथा भक्त अपने उपास्य परमात्मा की मर्यादा के अनुकूल आचरण करने वाले हो जाते हैं, तब आचार्य अपने शिष्यों तथा ईश्वर अपने भक्तों को सब सुखों से भर देते हैं। आचार्य ब्रह्मविद्या के द्वारा और ईश्वर उनकी बुद्धि को सर्वथा निर्दोष बनाकर तथा संस्कारों को दग्धबीज करके सुखों से भर देते हैं। **(अनु, ते, केतम्, आयम्)** ऐसे शिष्य वा भक्त अपने आचार्य वा ब्रह्म के निर्देशों में सर्वथा स्वयं को सम्प्राप्त रखते हैं अर्थात् वे सदैव उन निर्देशों का पालन करते हुए अपने जीवन को उत्तरोत्तर श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर व श्रेष्ठतम बनाने का प्रयास करते हैं। **(मे, वीर, तन्वः, तत्, राजा, आसीः)** अविद्यान्धकार को दूर भगाने वाला आचार्य वा महतो महान् लोकों तक को कम्पायमान करने वाला सम्पूर्ण सृष्टि को अपनी ज्योति से प्रकाशित करने वाला परमेश्वर अपने शिष्यों वा भक्तों के आत्मा के समान होता है।

**भावार्थ**-जो शिष्य वा भक्त संयत वाणी वा स्थिर बुद्धि से युक्त उन्हें आचार्य वा परमेश्वर अपने दोष-निवारक उपदेश वा ज्ञान के द्वारा निष्कलंक जीवन वाला बनाते हैं। इससे वे शिष्य वा भक्त अपने आचार्य वा परमात्मा की मर्यादा के अनुकूल आचरण करने वाले हो जाते हैं। तब निष्कलंक बने शिष्यों वा भक्तों का जीवन सुख व आनन्द से भर जाता है। ऐसे शिष्य वा भक्त अपने आचार्य वा परमात्मा के आदेशों का अनुकरण करने वाले होकर अपने आचार्य वा परमात्मा को अपने आत्मा के समान प्रिय मानते हैं। इसका अर्थ यह है कि शिष्य-आचार्य व भक्त व भगवान् के मध्य वैसा ही अटूट सम्बन्ध होना चाहिए, जैसा शरीर व आत्मा के मध्य होता है।

यहाँ हम अत्यन्त विनम्रता पूर्वक यह निवेदन करना चाहते हैं कि सत्यार्थ सौरभ में इस लेख को देने का हमारा तात्पर्य किसी विवाद को उत्पन्न करना नहीं है इसीलिए उक्त मन्त्र के पूर्व आचार्यों का भाष्य हमने नहीं दिया है हमारा उद्देश्य केवल इतना है कि आचार्य अग्निव्रत जी का भाष्य जिसमें लेख के प्रारम्भ में दर्शाए दोष नहीं हैं, क्या महर्षि दयानन्द की वेद भाष्य शैली के अनुरूप है? क्या यह वैदिक विद्वानों में सर्व स्वीकार्य हो सकता है? अगर ऐसा है तो आर्य जगत् को प्रसन्नता होगी।

यह भी निवेदन कर दें कि सत्यार्थ सौरभ को आगे इस विषय पर विवाद का अखाड़ा बनाना भी हमें स्वीकार्य नहीं है।

आशा है विद्वज्जन हमारी भावना समझ सकेंगे।

-अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

# समाचार

सभी आर्य बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यरत्न ठा. विक्रम सिंह इस वर्ष १६ सितम्बर २०२३ को अपने जीवन के ८० वसंत पूर्ण करने जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा, वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए किए गये उनके अतुल पुरुषार्थ तथा वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों व आर्य संस्थाओं के संरक्षण व संवर्धन के लिए उनके द्वारा किए जा रहे महनीय प्रयासों को देखते हुये आर्य नेताओं व विद्वज्जनों की दिल्ली में हुई बैठक (जनवरी ११, २०२३) में निर्णय लिया गया कि ८० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनका एक भव्य समारोह में अभिनन्दन किया जाए।

उनके लिए भेंट किए जाने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ की तैयारी के लिए आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री की अध्यक्षता में एक सम्पादक मण्डल भी गठित किया गया है। आर्य समाज के सभी नेताओं, मनीषियों, विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, उपदेशकों आदि से अनुरोध है कि ठा. विक्रम सिंह जी के सम्बन्ध में यदि आपके पास कोई संस्मरण हो, किसी कार्यक्रम के फोटोग्राफ हों अथवा उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से सम्बन्धित जानकारियाँ हो, व्यक्तिगत अनुभव हों तो तुरन्त टाइप करवाकर या हस्तलिखित रूप में उसे हमारे साथ साझा स्पीड पोस्ट अथवा ई-मेल द्वारा उपरोक्त पते पर करने हेतु अनुरोध है। इसी प्रकार वैदिक सिद्धान्तों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता, महर्षि दयानन्द व आर्य समाज का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान, शिक्षा व राजनीति के विषय में महर्षि दयानन्द का चिन्तन, महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विद्वज्जनों से अपने लेख भेजने हेतु निवेदन है। आर्य कवियों से भी अनुरोध किया जाता है कि आप भी ठाकुर विक्रम सिंह जी के जीवन से सम्बन्धित अपनी काव्य रचना शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें।

इस अवसर पर किए जाने वाले समारोह के सम्बन्ध में आपके पास यदि कोई सुझाव हों तो अवश्य अवगत करायें। इस अद्भुत आयोजन में आपके पूर्ण सहयोग की कामना है। तन-मन-धन से इस आयोजन में सहभागी बन आर्य समाज के नवनिर्माण के प्रयासों के साक्षी बनें। धन्यवाद।

- आनन्द कुमार IPS

### श्री गोयल साहब का अनुकरणीय दान

प्रसिद्ध शिक्षाविद्, वर्त्तमान में जयपुर निवासी, न्यास के परम हितैषी श्री एम.एल. गोयल एवं उनकी धर्मपत्नी जब नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के लोकार्पण समारोह में पधारे थे तब NMCC का अवलोकन करके अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने न्यास की आर्थिक सहायता की मनोकामना प्रकट की। न्यास में एक Dining Table की आवश्यकता अनुभव कि जा रही थी। उसी के लिए हमने निवेदन कर दिया। गोयल दम्पति ने तुरन्त सहर्ष अपनी स्वीकारोक्ति प्रकट कर दी। और इस प्रकार न्यास में एक अति सुन्दर Dining Table उपलब्ध कराने हेतु गोयल दम्पति के प्रति अनेकशः आभार।

## आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

## "सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

### कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

## ₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

## "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

**उदयपुर** के गुलाब बाग स्थित नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन करने के लिए दिनांक 14 मई 2023 को एमडीएच प्रा. लि. (एमडीएच मसाले) के चेयरमैन श्री राजीव गुलाटी अपनी धर्मपत्नी मान्या ज्योति जी गुलाटी एवं श्री प्रेम अरोड़ा तथा आर्य समाज के श्री जितेन्द्र भाटिया के साथ पधारे। आपने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के विभिन्न प्रकल्पों यथा माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण सभागार, मधु–हरि प्रेरणा कक्ष, अर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, 16 संस्कार वीथिका, दीनदयाल सुरेश चन्द्र आर्य मल्टीमीडिया सेन्टर इत्यादि प्रकल्पों का अवलोकन किया तथा यहाँ से वैदिक संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए किया जा रहे कार्यों की जानकारी ली।

प्रकल्पों का अवलोकन करने के पश्चात् श्री गुलाटी जी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास द्वारा नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के माध्यम से विभिन्न प्रकल्प तैयार किए गए हैं। यहाँ देश–विदेश से पर्यटक आकर प्रेरणा प्राप्त करते हैं। सच्चे अर्थों में कहा जाए तो नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र नैतिक मूल्यों की स्थापना की दिशा में सराहनीय कार्य कर रहा है। इसके लिए न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं उनकी टीम

# राजीव गुलाटी का मिला साथ, आओ आसमान को छूलें आज

बधाई की पात्र है। उनके पूज्य पिताजी दानवीर उद्योगपति (स्मृतिशेष) पद्मभूषण माननीय महाशय धर्मपाल जी न्यास के अध्यक्ष रहे तथा यहाँ माता लीलावन्ती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण सभागार का निर्माण उन्होंने करवाया। उनकी प्रबल अभिलाषा थी कि नवलखा महल के माध्यम से छात्रों व युवा पीढ़ी को अगर संस्कारयुक्त शिक्षा दी जाए और उनमें नैतिक मूल्य स्थापित किए जायें तो भारतवर्ष अपने पुराने गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है। राजीव जी ने कहा कि उन्हें प्रसन्नता है कि इसके लिए नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र सतत् प्रयासरत है। उन्होंने श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नवलखा महल के माध्यम से जो कार्य किए जा रहे हैं उनको तीव्र गति से किया जाए तथा नित नये प्रकल्प भी यहाँ से गतिशील रहने चाहिए इसके लिए एमडीएच की ओर से जो भी सहयोग न्यास को अपेक्षित होगा प्रदान किया जायेगा।

इससे पूर्व नवलखा महल आगमन पर श्री गुलाटी एवं एमडीएच के पदाधिकारियों का ओ३म् दुपट्टा, माल्यार्पण एवं तिलक लगाकर न्यास के पदाधिकारियों ने स्वागत किया। न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि श्री राजीव जी गुलाटी पद्मभूषण (स्मृतिशेष) माननीय महाशय धर्मपाल जी के पुत्र हैं तथा महाशय जी के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए उनकी

भाँति सद्कार्यों को अपनी दान सरिता से सिंचित कर रहे हैं।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि नवलखा महल वह स्थल है जहाँ महर्षि दयानन्द सरस्वती मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा सज्जन सिंह जी के आमंत्रण पर उदयपुर पधारे तथा गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में साढ़े छह माह विराजकर सत्यार्थ प्रकाश का प्रणयन सम्पूर्ण किया। नवलखा महल 1992 से पूर्व राज्य सरकार के अधीन था जहाँ राजस्थान सरकार के आबकारी विभाग का शराब का गोदाम था। आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज के अथक प्रयासों से यह 1992 में आर्य समाज को राज्य सरकार से 99 वर्ष की लीज पर प्राप्त हुआ। यह महल आर्य समाज को जीर्ण–शीर्ण अवस्था में प्राप्त हुआ, जिसके जीर्णोद्धार के लिए प्रथम आहुति एक करोड़ रुपये के रूप में न्यास के संस्थापक एवं आजीवन अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने दी। यहाँ भव्य यज्ञशाला का निर्माण करवाया गया जहाँ प्रतिदिन प्रातः एवं सायं यज्ञ होता है।

राजीव जी की धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति गुलाटी ने मुक्तकण्ठ से NMCC की प्रशंसा करते हुए कहा कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के अन्तर्गत जो प्रकल्प तैयार किए गए हैं वे अद्भुत हैं। ऐसे प्रकल्प विश्वभर में कहीं नहीं है। भारत देश के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने की दिशा में यहाँ के प्रकल्प अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे।

इस अवसर पर न्यास के संयुक्तमंत्री–डॉ. अमृतलाल तापड़िया, मंत्री–श्री भवानी दास आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री नारायण लाल मित्तल, कार्यालय सचिव–श्री भंवरलाल गर्ग, जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़, गाइड श्री विजय बंसल, मीडिया प्रभारी श्रीमती मधु अग्रवाल, श्री देवीलाल, श्री लक्ष्मण, श्रीमती दुर्गा एवं श्री कालूलाल एवं अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

अन्त में न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य ने धन्यवाद प्रदान करते हुए कहा कि पूज्य महाशय धर्मपाल जी ने नवलखा महल के विकास के लिए तीन चरणों की योजना को अपना आशीर्वाद दिया था। प्रभु कृपा से व आर्य समाज के अग्रजों के आशीर्वाद व सहयोग से दो चरण सम्पूर्ण होने पर NMCC वैदिक संस्कृति के प्रसारण में अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। तीसरे चरण की पूर्ति हेतु आदरणीय राजीव जी गुलाटी ने मुक्त हृदय से जो आशीर्वाद दिया है उसके लिए न्यास के न्यासी ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आर्य जगत् उन्हें नमन करता है।

**NMCC UDAIPUR** की एक बहुत बड़ी समस्या के समाधान के रूप में एमडीएच के चेयरमैन माननीय राजीव जी गुलाटी द्वारा अत्यन्त उदारता पूर्वक एक इलेक्ट्रिक यूटिलिटी व्हीकल 6 सीटर न्यास को प्रदान किया गया है। यहाँ आने वाले वरिष्ठ नागरिकों को और चलने में अशक्त बन्धुओं को गुलाब बाग के गेट से नवलखा महल तक आने में अत्यंत ही असुविधा का अनुभव होता था। इसका निदान एक ही था कि गोल्फकार्ट जैसा कोई वाहन न्यास के पास हो। आज भाई राजीव जी की कृपा से यह परेशानी दूर हो गई है। उन्होंने बड़ी उदारतापूर्वक उक्त वाहन प्रदान कर उन सैकड़ों आर्यजनों एवं पर्यटकों को राहत प्रदान की है जिनके लिए पैदल चलना कष्टकारी होता है। हम न्यास की ओर से और अपनी ओर से राजीव जी का अत्यन्त आभार प्रकाशित करते हैं।

– अशोक आर्य

कुछ माह पूर्व जब सिलीगुड़ी से भाई सत्येन्द्र आर्य जी, अशोक आर्य जी, सुभाष आर्य जी आदि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र देखने पधारे तभी से उनका आग्रह था कि हम सिलीगुड़ी आकर के उनके द्वारा विकसित अत्यन्त सुन्दर केन्द्र 'वैदिक सेवा आश्रम' का अवलोकन करें, और इस विमर्श में सम्मिलित हों कि आगे इसको क्या स्वरूप दिया जाए जिससे यह अधिकाधिक जनोपयोगी बन सके। उधर आदरणीय भाई राजकुमार जी आर्य का काफी आग्रह था कि हम लोग सिलीगुड़ी अवश्य आएँ।

यद्यपि यात्राएँ न करने का हमारा क्रम रहता है, परन्तु इस आग्रह को स्वीकार करना ही पड़ा और इसी क्रम में इस यात्रा को पर्यटन से भी जोड़ दिया और दार्जिलिंग और गंगटोक का प्रोग्राम भी हमारे अनन्य, न्यास के कोषाध्यक्ष भाई श्री नारायण जी मित्तल के साथ सपत्नीक बना लिया। गंगटोक में एक आकर्षण यह भी था कि आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता माननीय बाबू गंगा प्रसाद जी जब वहाँ के राज्यपाल थे तब उन्होंने आर्य समाज/डीएवी के निमित्त एक स्थान आर्य समाज को उपलब्ध कराया था, इच्छा थी कि उसका क्या चल रहा है यह भी देखने का प्रयास करें।

इसी क्रम में 17 मई को हम सिलीगुड़ी पहुँचे और आर्य परिवार का आतिथ्य हमें प्राप्त हुआ। वैदिक सेवा आश्रम अत्यन्त मनोरम स्थल पर बनाकर, आदरणीय सत्येन्द्र जी ने काफी विकसित किया हुआ है। यहाँ महर्षि दयानन्द का एक सुन्दर स्टेच्यू भी बना हुआ है। एक ध्यान केन्द्र आपने बनाया है जिसमें अन्य किसी प्रकार की चर्चा करना वर्जित है। वहाँ ओ३म् की ध्वनि गूँजती रहती है और वहाँ थोड़ी देर बैठ कर के व्यक्ति एकाग्र हो प्रभु स्मरण करना चाहे तो निश्चित ही मन को केन्द्रित करने में उसे सहायता मिलती है। एक गुरुकुल और छात्रावास की व्यवस्था भी उन्होंने की है। शीघ्र सम्भवतः डीएवी विद्यालय भी वहाँ खोलने की योजना है। एक छोटी सी गौशाला है और खाली स्थान भी है जिसे आकर्षक और प्रेरक बनाया

## एक पन्थ दो काज

जाना है, इस पर सभी भाइयों के साथ बैठ कर के विचार–विमर्श भी हुआ। दूसरे दिन हमारे प्रति अत्यन्त स्नेह रखने वाले आदरणीय भाई राजकुमार जी शर्मा के साथ आर्य समाज सिलीगुड़ी जाने का कार्यक्रम बना। यहाँ की यज्ञशाला को बड़ी सुन्दरता के साथ बनाया और सजाया गया है और सत्संग हॉल आदि प्रथम तल पर बनाए गए हैं। कुछ और प्रकल्प भी थे जहाँ हम समय अभाव की दृष्टि से नहीं जा पाए।

निश्चित रूप से सिलीगुड़ी के ये दो परिवार दो महापुरुषों आदरणीय जवाहर लाल जी आर्य एवं आदरणीय रतिराम जी शर्मा की आर्ष विचारधारा को परिवार में छोटे-छोटे बच्चों तक ले जाने में सफल हुए हैं और हमारे विचार में यही सबसे प्रभावशाली और अनुकरणीय बात है जिसका आज प्रायः सर्वत्र अभाव देखने को मिलता है।

यह दोनों परिवार आर्य समाज की जीती जागती निर्माण शाला हैं। अगर इनका अनुकरण कर लिया जाए तो कोई कारण नहीं है कि आर्य समाज प्रगति के पथ पर आगे ना बढ़ सके।

यात्रा की विशेष चर्चा न करते हुए अंकित करना चाहेंगे कि 'नाथुला पास' पर हमारा स्वास्थ्य अत्यधिक खराब हो गया था, अतः गंगटोक में हम आर्य समाज की जगह तो नहीं जा पाए परन्तु अत्यन्त स्नेह के साथ आर्य समाज के पदाधिकारी गण होटल में ही हमसे मिलने आ गए। उनसे काफी देर तक विचार विमर्श हुआ। निश्चित रूप से भारतवर्ष के सभी आर्यजन मिल कर के अगर गंगटोक जैसी जगह में आर्य समाज के कार्य को बढ़ाने में सहायक होंगे तो उत्तम होगा। इस प्रकार हमारी यह यात्रा पर्यटन की दृष्टि से भले ही उतनी सफल ना रही हो परन्तु उस क्षेत्र के प्रभावशाली आर्यजनों के साथ बैठकर विचार–विमर्श करने का दुर्लभ अवसर अवश्य हमें मिल सका, यह परमात्मा की कृपा है।

# बेटी की तपस्या और संकल्प ने पिता की इच्छा पूरी की।

श्री रामभज जी मदान, दिल्ली से, हमारा विचार है कि प्रायः आर्य जन परिचित होंगे। लगभग डेढ़ दशक पूर्व शिकागो आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जब हमने अपने उद्बोधन में इस बात को रेखांकित किया कि सुन्दर और आकर्षक पर्यटन स्थल, जिनमें कि सर्वत्र वैदिक संस्कृति के अंकुर बिखरे पड़े हो और सुगन्धित पुष्प पल्लवित हो रहे हों, चाहे कम संख्या में सही उनका निर्माण अत्यन्त आवश्यक है ताकि आर्य समाज से जिन लोगों का अभी तक परिचय नहीं हो सका वे भी उसके आकर्षण में बंधे हुए दर्शनार्थ आ सकें। यह Foot fall आवश्यक है। आएँगे तभी न जानेंगे, और उसके बाद ही वे वैदिक संस्कृति की विशेषताओं से परिचित होंगे। (प्रसंगवश NMCC UDAIPUR ने इस बात को तीन माह में ही अक्षरशः सत्य सिद्ध कर दिया है।) इस प्रस्ताव को सुनकर के अनेक महानुभावों ने अपने स्नेह के दायरे में हमें समेट लिया, उनमें से एक मदान साहब भी थे। तब से समय–समय पर आपका प्यार आशीर्वाद और उदार सहयोग न्यास को प्राप्त होता रहा। अभी जब NMCC का निर्माण कार्य चल रहा था, तब भी आपका सहयोग प्राप्त हुआ। 26 फरवरी 2023 को आर्य जगत् के भामाशाह मान्यवर एस.के. आर्य जी की अध्यक्षता में और गुजरात के राज्यपाल वैदिक मनीषी आचार्य देवव्रत जी के कर कमलों द्वारा उदयपुर में NMCC का लोकार्पण होने के अवसर पर हमारे निवेदन पर मदान साहब की बहुत इच्छा थी कि वे आएँ, परन्तु उनका स्वास्थ्य अब ऐसा नहीं है कि वह जब चाहें तब अपने भरोसे चल पड़ें। उन्हें साथ ले जाने वाले की आवश्यकता थी। आपकी पुत्री जो कि अध्यापिका हैं, उनके विद्यालय में परीक्षाएँ थीं परन्तु इतनी प्रबल अभिलाषा को देखते हुए उन्होंने अपने पिता को आश्वासन दिया कि अवकाश के दिनों में मैं आपको उदयपुर लेकर चलूँगी ताकि आप नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र को देख पाएँ। मैं नमन करता हूँ इन माननीय बहन जी को जिन्होंने अत्यन्त कष्ट सहते हुए भी अपने संकल्प को पूरा करते हुए माननीय रामभज जी मदान को नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर के दर्शन कराए।

मदान साहब को तो खैर भावविभोर होना ही था परन्तु उनकी बिटिया रेणु जी और उनकी मित्र भी सम्पूर्ण प्रकल्प को देखकर के अत्यन्त प्रभावित हुईं।

आर्य समाज के प्रचार को उन्नत दिशा में ले जाता देख कर के, न्यास द्वारा इस प्रकार की गतिविधियाँ रुकें नहीं, निरन्तर चलती रहें, इस हेतु मदान साहब ने खुले मन से अपना उदार सहयोग भी न्यास को प्रदान किया।

अपनी ओर से और न्यास की ओर से मदान साहब को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बहन रेणु जी का विशेष रूप से धन्यवाद कि वे मदान साहब को उनकी इच्छा के अनुसार यहाँ तक लेकर के आईं।

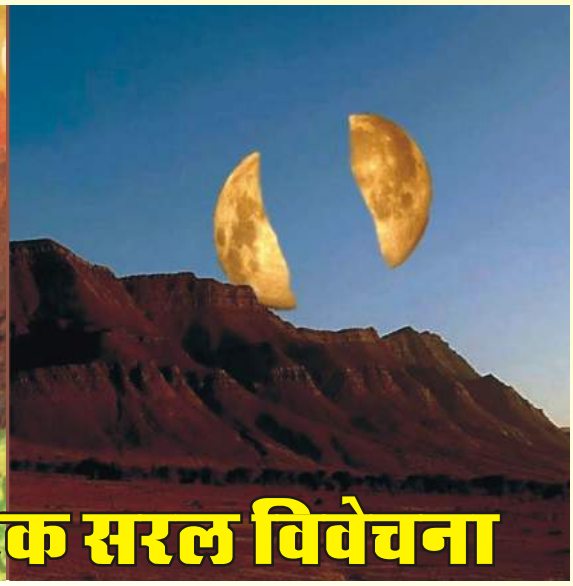

# विद्या-अविद्या : एक सरल विवेचना

मनुष्य के जीवन की सफलता-असफलता, और उत्थान-पतन से लोक-परलोक के सुधरने-बिगड़ने तक का सारा खेल जिस एक प्रश्न पर टिका हुआ है, वह प्रश्न विद्या-अविद्या का ही है। दुःखादि बन्धन और सुखादि मोक्ष की प्राप्ति पूरी तरह से विद्या-अविद्या के स्वरूप को भली-भाँति जानने समझने पर ही निर्भर है! यहाँ एक चीज थोड़ी समझने वाली है, अज्ञानता-अविद्या का मारा आज का मनुष्य थोड़ा बहुत पढ़-सीख कर तथा कुछ मंत्र-श्लोकों को स्मरण करके यह मान बैठता है कि मैंने विद्या प्राप्त कर ली। सिगरेट की डिब्बी व तम्बाकू के पैकेट पर इनके सेवन से होने वाली हानियों से सम्बन्धित चेतावनी लिखी रहती है। इनका सेवन करने वालों के जीवन में चेतावनी वर्णित हानियाँ न्यूनाधिक मात्रा में स्पष्ट दिखाई देती हैं, फिर भी अगणित पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी, शरीर विज्ञानी (डाक्टर) तक इन नशीले पदार्थों का निःसंकोच सेवन करते हैं। उन्हें क्या कहें? जानना (ज्ञान) वही है जो हमारे व्यवहार में चरितार्थ होकर हमारे स्वभाव का अंग बन जाये। विद्या-विज्ञान के क्षेत्र में 'शब्दवित' होने से काम नहीं चलता, यहाँ 'आत्मवित' होने पर ही विद्वान् व ज्ञानी कहलाता है। जो विद्या विश्वास की अंगुली पकड़कर व्यवहार के पथ पर निरन्तर बिना थके, बिना रुके गतिमान होती हुई हमारे स्वभाव का सहज अंग नहीं बन पाती वह अविद्या के वरण से मुक्त नहीं मानी जाती! वर्तमान के सुशिक्षित, बुद्धिजीवी, विद्वान् कहलाने वालों पर मुझे बहुधा क्रोध और क्षोभ की सीमा तक पहुँचा हुआ आश्चर्य होता है कि मत-पन्थों व सम्प्रदायों की पाखण्ड पूर्ण, बुद्धि-विज्ञान के विरुद्ध परम्पराओं पर विश्वास टिकाकर लाखों करोड़ों तक धन लुटा देते हैं, सैकडों, सहस्रों कि.मी. तक की कष्टप्रद यात्राएँ करके, दुर्गम पहाड़ों की यातनापूर्ण चढ़ाई चढ़कर प्राणों को संकट में डालने तक की स्थिति में पहुँच जाते हैं।

घर-परिवार से लेकर सामाजिक स्तर तक अनेक प्रकार के अनौचित्यपूर्ण अनुष्ठान करते कराते हैं, रूढ़ियों-कुरीतियों के भार तले दबे विवेक का जब तब गला घौंटते रहते हैं। दूसरी ओर ज्ञान-विज्ञान के सहारे तार्किक परणति तक पहुँचाने वाले वैदिक सिद्धान्त, जिनका हमारी समग्र ऋषि परम्परा एक स्वर से अनुमोदन करती चली आ रही है, निष्पक्ष न्यायनिष्ठ सज्जन आज भी, चाहे वे गिनती में कम ही हों उन वैदिक सिद्धान्तों को स्वीकारते, सुख पाते हैं, ऐसे बुद्धिगम्य सत्य सिद्धान्तों पर विश्वास टिकाकर उन पर आचरण करना हमारे बुद्धिजीवियों, विद्वानों व धार्मिक कहे जाने वालों के लिए असम्भव

कोटि तक कठिन क्यों हो गया है? क्या ५००० वर्षों तक अन्धपरम्पराओं की अभ्यस्त बन चुकी मानवीय बुद्धि आज सत्य अर्थ के प्रकाश से चुंधियायी सी होकर रह गई है?

क्या सच का सामना करने की मानव की सामर्थ्य और सत्य को स्वीकार करने की शक्ति अर्थात् श्रद्धा क्या आज के मानव से पूरी तरह रूठ गई है? प्रश्न बड़ा जटिल है, निष्पक्ष और न्यायनिष्ठ बने रहने वाले कतिपय भाग्यवानों को छोड़कर मानवता का एक बहुत बड़ा भाग अपने-अपने ढंग की अन्य परम्पराओं का क्रीतदास बनकर रह गए हैं।

इस विद्या-अविद्या के प्रपंच को देखकर मन में एक प्रश्न उठता है कि क्या अविद्या का प्रभाव इतना प्रबल है कि वह विद्या को पांव नहीं टिकाने देती? इस प्रश्न का उत्तर देने से पूर्व अविद्या का स्वरूप समझ लेना बहुत आवश्यक है, क्योंकि अविद्या के स्वरूप को समझे बिना अविद्या के प्रभाव का अनुमान लगाना कठिन होगा। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में योगदर्शन का सूत्र देकर अविद्या का स्वरूप समझाते हैं। ऋषि लिखते हैं-

**'अनित्याशुचि दुःखानात्मसु नित्यशुचि सुखात्म-ख्यातिर विद्या।'** - योग दर्शन २/५

अर्थात् जो 'अनित्य' संसार और देहादि में नित्य- अर्थात् जो कार्य जगत् देखा-सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यही देवों का शरीर सदा रहता है- वैसी विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। संसार में जो मनुष्य ऐसा कहते-मानते हैं, वे अविद्या से ग्रस्त हैं।

'अशुचि' अर्थात् मलमय स्त्रियादि के शरीर को शुद्ध और पवित्र मानना (यहाँ पुरुष शरीर भी वैसा ही समझें) झूठ बोलना व चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि, अविद्या का दूसरा भाग है। अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुख बुद्धि आदि तीसरा और अनात्मा में आत्म बुद्धि करना अविद्या का चौथा भाग है। इन चार अविद्या-भागों पर न्यायबुद्धि से विचार करें तो धरती तल पर ऐसे व्यक्ति अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं, जो अविद्या के इन चार भागों में किन्हीं एक-दो या अधिक से ग्रस्त त्रस्त न हों। व्यक्तिगत पूछताछ करें तो ऐसा शूरवीर, धीर-गम्भीर पुरुष कौन होगा, जो हृदय पर हाथ रखकर सार्वजनिक रूप से घोषणा कर सके, कि वह अविद्या के चारों भागों से सर्वथा मुक्त है, जो गलत को गलत जानकर भी नकार न सके तथा सत्य को सत्य समझकर भी स्वीकार न सके उसका जानना और समझना भी न जानने, न समझने जैसा ही है। यह तो अविद्या के प्रबल प्रभाव की एक सहज सी झाँकी है।

अगर हम विद्या के प्रभाव की बात करें तो विचार करने पर विद्या का प्रभाव अविद्या से इतना प्रबल है कि एक विद्याधर पुरुष सैकड़ों सहस्रों ही नहीं असंख्य अविद्याग्रस्तों को निरुत्तर और निस्तेज कर देता है। अविद्या केवल उन्हीं लोगों को अपने प्रबल पाश में बाँधे रख सकती है जो आत्मबल से शून्य रहकर आत्मकल्याण के लक्ष्य से अनभिज्ञ रहकर केवल सांसारिक सुख-सुविधाओं को ही जीवन की सर्वोपरि उपलब्धि मान लेने की महाभ्रान्ति में जीवन निकाल देते हैं। जिसका लक्ष्य जितना बड़ा या छोटा होता है, उसकी सोच, योजनाएँ व बौद्धिक परिधि भी वैसा ही आकार धारण कर लेती हैं। जिनके लिए सांसारिक सुख भोगों से अधिक कुछ है ही नहीं, जो इस अस्थिर, परिवर्तनशील संसार में मिलने वाले क्षणिक सुख-साधनों को ही सब कुछ मान बैठे हैं, जो अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुखबुद्धि माने हुए हैं, वे तो स्पष्टतः अविद्या के ग्रास हैं ही, उनके लिए तो अविद्या ही प्रबल है! हाँ जो महाभाग विचारशीलता का आश्रय लेकर जीवन की गुत्थी को सुलझाने के लिए प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर चलते हुए शरीर से आगे बढ़कर आत्मतत्व तक तथा संसार से आगे बढ़कर संसार के बनाने व चलाने वाले परमात्म तत्व तक पहुँचने का प्रयास करते हैं, विद्या अपना स्वरूप उन्हीं के लिए खोलती है। महर्षि दयानन्द सत्यार्थ

प्रकाश में विद्या का स्वरूप भी प्रकट करते हैं **'वेत्ति यथावत्तत्त्वं पदार्थस्वरूपं यया सा विद्या।'** जिससे पदार्थों का यथार्थ स्वरूप बोध होते हैं वह विद्या कहाती है। संसार के समस्त पदार्थों के सच्चे स्वरूप का बोध कराने वाली विद्या है। अब तनिक एक विचार और कर लें कि अविद्या से ग्रस्त जनमानस संसार के पदार्थों के सत्यस्वरूप के बोध से वंचित ही रहता है। कैसी विचित्र विडम्बना है। संसार का सबसे अधिक बुद्धिमान और सर्वश्रेष्ठ प्राणी होने का दावा ठोकने वाले मानव समुदाय का एक बहुत बड़ा भाग अविद्या के अन्धकूप में पड़ा हुआ संसार के सच्चे स्वरूप से वंचित होकर जीवन जी रहा है। इतने पर भी चाहता है कि वह सुखी रहे! यह भी अविद्या का विचित्र प्रभाव है।

विद्या के प्रभाव का दर्शन करना हो तो विद्या के सच्चे उपासक, विद्या पाने और लुटाने में जीवन का सच्चा आनन्द लेने वाले महामानवों के जीवन प्रसंगों पर

दृष्टि डालनी होगी। विद्यावान पुरुष चाहे गिनती में कम हों, चाहे सदियों सहस्राब्दियों में उनके दर्शन सुलभ होते हों, लेकिन उनकी वाणी, लेखनी और उनके व्यवहार का प्रभाव मानव जाति के उच्च मतिष्कों पर युगों तक अमिट छाप के रूप में स्पष्ट देखा जा सकता है। विद्याविभूषित सज्जनों का गौरव कहें या विद्या का प्रखर तेज कि उनके जीवन में अविद्या तथा तज्जन्य भ्रान्तियों का प्रवेश सर्वथा वर्जित होता है। अविद्याग्रस्त व्यक्ति के जीवन में छोटी-छोटी चीजों को लेकर बहु प्रकार के विचलन और आवेगों के उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। शोक-मोह से लेकर भय-क्रोध और राग-द्वेष के झंझावातों के साथ नाना प्रकार की व्यथा-वेदनाएँ अविद्याग्रस्त व्यक्ति की सुख-शान्ति को आघात करती रहती हैं। विद्या-सम्पन्न मानव की आन्तरिक शान्ति हर प्रतिकूलता और पहाड़ जैसी आपत्ति में भी अटल-अचल रहती है। संसार के बड़े से बड़े भय और प्रलोभन अगर एकजुट होकर भी टूट पड़ें तो भी विद्यावान पुरुष उनके सामने पूरे आत्मविश्वास के साथ अडिग होकर खड़ा रहता है। भय व क्रोध से लेकर लालच व ईर्ष्या-द्वेष तक को संसार का कोई बुद्धिमान सद्गुण नहीं मानता, सभी एक स्वर से इन्हें दोष व दुर्गुण ही मानकर चलते हैं। ऐसे में इनके प्रभाव में आकर कुछ भी उल्टा सीधा कर डालना वीरता और बडप्पन की बात तो नहीं कहीं जा सकती।

काम क्रोध आदि भावावेशों के सामने मानवी बुद्धि विवेक का बौना पड़ जाना या हथियार डाल देना मानव होने पर ही प्रश्न खड़ा कर देता है। एक अविद्या प्राप्त व्यक्ति के जीवन में ऐसा प्रायः प्रतिदिन होता रहता है।

ऐसे में एक बात सुस्पष्ट है कि अविद्या विस्तार की दृष्टि से भले ही मानव जाति के बहुत बड़े भाग अर्थात् अधिसंख्य मानवों के मन और मस्तिष्क में डेरा डाले पड़ी हो, लेकिन उसका स्वयं का बल और तेज इतना नहीं है कि वह अपने आश्रयदाता को आन्तरिक और बाहरी शत्रुओं के आक्रमणों से बचा सके या बचे रहने की शक्ति और सामर्थ्य ही उसे दे सके।

विद्या इस दृष्टि ने पूर्ण सक्षम और सामर्थ्यवान् है। मानव तनिक धैर्य और साहस जुटाकर विद्या को अपने हृदय व मस्तिष्क में प्रकट और प्रकाशित होने का अवकाश प्रदान कर दे तो विद्या मनुष्य के जीवन को निरन्तर पवित्र बनाती हुई उसे मुक्ति का पात्र

बना देती है। तभी तो कहा है- **'सा विद्या या विमुक्तये'** विद्या वह है जो हमें मोक्ष की पात्रता प्रदान करे।

ऐ मानव! तनिक विचार तो कर! अविद्या के भ्रम में कब तक भटकता रहेगा? अनित्य संसार और स्वशरीर आदि को नित्य-सदा बना रहने वाला मानने से तेरा काम नहीं चलेगा, जो बना है वह बिगड़ेगा अवश्य। स्त्री-पुरुष आदि के प्रति कामासक्ति पूर्ण आकर्षण, झूठ बोलना व चोरी करना आदि अपवित्र कर्म हैं, इनके करने से तेरा अन्तःकरण मलिन व अपवित्र होता है। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि का सुखद प्रतीत होने वाला अतिशय सेवन मूलतः दुःखद परिणाम पर ले जाकर छोड़ता है। ध्यान रख इनका अनुकूल संसर्ग ही सुखद है, परिणाम तो कर्म के बाद ईश्वरीय व्यवस्था से कर्म के परिपाक होने पर प्रकट होता है। अनात्मा में आत्मबुद्धि रखकर धातु निर्मित मूर्तियों को परमात्मा मानकर जड़ की उपासना करके बुद्धि को जड़वत् बनाकर तूने कौनसी उन्नति प्राप्त कर ली। इन अविद्या प्रपंचों में पड़कर तूने उस विद्या का तिरस्कार किया है जो तुझे संसार के सब पदार्थों का तत्वबोध कर मुक्ति का अधिकारी बना सकती थी। क्या अब भी विद्या से विमुख रहकर अनर्थकारी अविद्या का पल्लू पकड़े रखेगा? सोच खूब सोच एक बार फिर सोच!!! तेरा भविष्य तुझे ही बनाना है। बना ले।

लेखक- राम निवास गुणग्राहक

**सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/२२ के विजेता**

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), हर्षवर्धन आर्य; नवादा (बिहार), श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री जीवनलाल आर्य; (दिल्ली), श्रीमती कमल कान्ता सहगल, पंचकूला (हरियाणा), श्री नन्दलाल जी आर्य, बेतिया; (बिहार), रमेश चन्द्र राव, पुरोहित आर्यसमाज; मन्दसौर (म. प्र.)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

**ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 16 पर अवश्य पढ़ें।**

## सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

**1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।**

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

**निवेदक**

| अशोक आर्य | भवानीदास आर्य | डॉ. अमृत लाल तापड़िया |
|---|---|---|
| अध्यक्ष-न्यास | मंत्री-न्यास | संयुक्तमंत्री-न्यास |


# आजीवन सत्यार्थमित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बंधु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

**पुनर्नवीनीकरण के झंझट से मुक्ति**

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

# संसार में वेद ही पूर्ण ज्ञान का भण्डार है

संसार में अनगिनत असंख्य ज्ञानवर्धक पुस्तकें, ग्रन्थ, आध्यात्मिक रचनाएँ उपलब्ध हैं, किन्तु ऐसा एक भी ग्रन्थ या संग्रह नहीं है, जिसमें मानव की सभी आवश्यकताओं के समाधान सम्बन्धी व्यवस्था का उल्लेख हो। इसका प्रमुख कारण सोचें तो स्पष्ट होता है कि मनुष्य को कितना भी ज्ञान हो जाए, कितनी भी बौद्धिक प्रगति कर ले, किन्तु उसके ज्ञान की सीमा कुछ बातों तक ही आकर रुक जाएगी। संसार की समस्त वस्तुओं, कलाओं, सृष्टिजन्य कार्यों का उसे ज्ञान होना कदापि सम्भव नहीं है, क्योंकि वह अल्पज्ञ है, इस कारण उसका ज्ञान भी पूर्ण नहीं हो सकता।

किन्तु परमात्मा पूर्ण है, ज्ञान का भण्डार है, समस्त ब्रह्माण्ड उसकी कृति है, उसमें सब, और सबमें वह समाया हुआ है। इसलिए वह बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी प्रत्येक गति, प्रत्येक कार्य का ज्ञाता है, हृदय में उठनेवाले भावों को भी जानने वाला हैं, क्योंकि वह सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है, पूर्ण है। जर्रा-जर्रा उसका निवास स्थान है, फिर उससे कुछ भी अछूता कैसे रह सकता है?

आज अनेक नई संस्थाओं और वस्तुओं का निर्माण हो रहा है, जो व्यक्ति किसी संस्था का निर्माण करते हैं या कोई कम्पनी किसी वस्तु का निर्माण करने वाली हो, वही उसके उद्देश्य व उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी रखती है। ठीक इसी प्रकार जगत् रचयिता परमेश्वर है, इस कारण उसी को समस्त ब्रह्माण्ड की जानकारी है। क्योंकि वह रचयिता है तथा पूर्ण है, प्रकाशपुंज तो वही है, इसलिए कहा गया –

**पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।**
**पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।**

अर्थ- वह परमेश्वर पूर्ण है, यह जगत् भी पूर्ण है, पूर्ण स्वरुप भगवान से ही पूर्ण जगत् उदय होता है, उस समय पूर्ण परमेश्वर का पूर्ण स्वरूप लिये जाने पर भी अनन्त महिमामय भगवान सर्वत्र पूर्ण ही रह जाता है, वह कदापि खण्डित नहीं होता। परमात्मा की पूर्णता और महानता का उदाहरण यह मन्त्र बताता है।

**ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।** - यजुर्वेद १३/४

अर्थ- परमात्मा ने ही सूर्य, चन्द्रमा को उत्पन्न किया है, धरती-आकाश को धारण किया है, जगत् उत्पन्न होने के पूर्व भी विद्यमान था, इस बात को उपर्युक्त वेदमन्त्र स्पष्ट करता है।

ऐसा महान् शक्तिशाली परमात्मा ही सामर्थ्यवान् है, जो पूर्ण ज्ञान का स्वामी है। उस परमात्मा के द्वारा हमें दिया गया वह ईश्वरीय ज्ञान भी पूर्ण है, जो समस्त सत्य विद्याओं का भण्डार है। अपने जीवन में हजारों पुस्तकों, ग्रन्थों, शास्त्रों का अध्ययन करनेवाले युगप्रवर्तक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के सम्बन्ध में अपने स्वाध्याय व अनुभव के पश्चात् ही लिखा- **'वेद सब सत्य विद्याओं का**

पुस्तक है।' पुनः कहा 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'

आचार्य मनु ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा- 'सर्वज्ञान मयो हि सः' अर्थात् समस्त ज्ञान वेद में समाहित है। पुनः महर्षि मनु ने महत्वपूर्ण सन्देश दिया- 'भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति।'

अर्थात् भूत, भविष्य वर्तमान में होनेवाली समस्त बातें वेद से सिद्ध हैं, अर्थात् मानव के सर्वांगीण विकास का मार्ग वेद है ।

वेद ज्ञान ही ईश्वरीय व पूर्ण है, इसका एक बहुत स्पष्ट उदाहरण हमें सोचने व मानने पर विवश कर देता है। संसार का कोई भी व्यक्ति कितनी इच्छाएँ रखता है, यह बताना सम्भव नहीं है। यदि पूछा जाए कि एक मनुष्य की इच्छाओं को किसी के द्वारा बताया जा सकता है? तो इस प्रश्न का भी उत्तर किसी ग्रन्थ, पुस्तक या मजहबी ग्रन्थों में नहीं है। ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं है जिसमें मनुष्य की समस्त इच्छाओं की पूर्ति का निदान करने का मार्ग प्रशस्त किया गया हो। संसार के सारे ग्रन्थ, लेख छान लीजिए, किन्तु ऐसा कोई ग्रन्थ आप प्राप्त नहीं कर सकते हैं, यह निश्चित है। क्योंकि मानव विचारों में इतनी व्यापकता सम्भव नहीं है। किन्तु परमात्मा ने यह समस्त ज्ञान वेद के माध्यम से हमें प्रदान किया, जिसमें समस्त इच्छाओं का वर्णन और उसकी पूर्ति का उपाय भी बताया। एक अबोध बालक की इच्छाओं उसके रोने के कारणों को उसकी माँ जान लेती है ठीक उसी प्रकार परमात्मा भी हम सब की माँ भी है इसलिए हमारी सारी इच्छाओं की जानकारी उसे रहती है। इस सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण मन्त्र उल्लिखित किया जा रहा है -

ओ३म् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं, ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥ - अथर्ववेद १९/७१/१

अर्थात् हे मनुष्यों! ब्राह्मणों को पवित्र करनेवाली, उत्तम पदार्थ दिलाने वाली वेदमाता का मैंने उपदेश कर दिया है। इसके द्वारा आयु, प्राण, प्रजा (सन्तान), पशुधन, कीर्ति, धन, ब्रह्मतेज तुम प्राप्त करो। यह सब वेदमाता तुम्हें प्रदान कर सकती है।

उपरोक्त दर्शायी गई इच्छाओं से परे संसार के किसी भी मनुष्य की अन्य इच्छा नहीं है। इन्हीं सात बातों में संसार के प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाओं को समाविष्ट किया जा सकता है और इनकी पूर्ति वेदमार्ग के माध्यम से ही सम्भव है। इसलिए वेद की पूर्णता सिद्ध होती है।

वेद की पूर्णता का एक और उदाहरण देखा जा सकता है। दुनिया के वैज्ञानिक जिन नए-नए प्रकृति के तथ्यों को खोजकर अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं उनकी इस विषय पर ज्ञान की अवधि कुछ सौ वर्षों की है, परन्तु वर्तमान सृष्टि के निर्माण को लगभग दो अरब साल (सृष्टि सं. १९६०८५३१२३) हो गये हैं, उस समय ही परमात्मा के द्वारा दिए गए उस दिव्यज्ञान वेदों में इस सबका वर्णन पूर्व से ही विद्यमान है। पृथ्वी, आकाश, अन्तरिक्ष, सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, वनस्पति, आवास, स्वास्थ्य, संगीत, गणित, ज्योतिष आदि के समस्त ज्ञान का भण्डार वेद है। आज भी वेदों में अनेक ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य विद्यमान हैं जो संसार से अछूते हैं। समझने के लिए वर्तमान समय में प्रचलित विविध वस्तु भण्डार (Super Market) की उपमा वेद से कर सकते हैं। जिस प्रकार सुपर मार्केट में आवश्यकता की समस्त वस्तुएँ एक स्थान पर उपलब्ध हो जाती हैं, ठीक उसी प्रकार वेद अकेले में मानव जीवन के लिए उपयोगी समस्त ज्ञान भण्डार उपलब्ध हैं। क्योंकि यह ज्ञान उस पूर्ण ज्ञानी परमात्मा का ज्ञान है जो पूर्ण है तो उसका ज्ञान भी पूर्ण ही है यह मानना चाहिए, वायुयान का निर्माण भारत के ही निवासी तलपदे बन्धुओं ने सन् १८७५ में आस-पास करके मुम्बई की चौपाटी पर उसका परीक्षण किया था। इसका आधार वेद ज्ञान था। इसलिए कहा-

**'नास्ति वेदात परमं शास्त्रम्।'**

वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं है।

वेद सबसे प्राचीन व सर्वज्ञानयुक्त हैं इसे अनेक, विभिन्न मतावलम्बी विद्वानों ने भी स्वीकार किया है। विदेशी विद्वान् पावगी लिखते हैं-

The Veda is the Fountain head of knowledge, the prime source of inspiration, may the grand repository of pithy pages of divine wisdom and eternal truth. {Mother of Parliament page 1 3} 6

अर्थात् वेद सम्पूर्ण ज्ञान का आदि स्रोत है ईश्वरीय ज्ञान का प्रधान आधार है, इतना ही नहीं, अपितु दिव्य बुद्धि और सत्यमय सारयुक्त वाक्यों का भण्डार है। आचार्य मनु पुनः कहते हैं-

**पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।**
**अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः।।**

शुभ और अशुभ को दिखानेवाला पितृदेव मनुष्यों का शाश्वत चक्षु वेद है संसार के सभी रहस्य वेद में निहित हैं। - मनु १२/९४

वेद प्रभु की वाणी है, शाश्वत है, सनातन है, इस सन्दर्भ में वेद मन्त्र ने बताया-

**पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।**

अर्थात् परमात्मा के उस काव्य वेद को देखो जो न कभी मरता (नष्ट होता) है और न कभी जीर्ण या पुराना होता है।

यह एक और तर्क संगत बिन्दु है जिस पर गम्भीरता से विचार करें तो वेद प्राचीनतम तथा ईश्वरीय ज्ञान है, प्रथम संस्कृति है, यह सब स्वतः स्पष्ट हो जाएगा।

लेखक- प्रकाश आर्य
महू ( मध्यप्रदेश )

## प्रतिस्वर

आपका शब्दों में धन्यवाद करना अन्याय होगा। लोग ऋषि की जय के केवल नारे लगाते है परन्तु आप उनके कार्य को पूरा करने में अपना सर्वस्व लगा उनके सपने को सार्थक कर रहे हैं। आप जैसे साथी को पाकर जीवन में एक नई उमंग भर गई है। आपको नमन। - नीरज आर्य दिल्ली

भाई साहब! आपने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर जो प्रकाश डाला है वह जन मानस को प्रभावित करता है। आप जिस पुनीत कार्य में लगे हुए हैं उसमें निरन्तर बढ़ोतरी होती रहे इसके लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपको ज्यादा से ज्यादा शक्ति प्रदान करें एवं स्वस्थ शरीर के साथ हर तरह से खुशहाल रखें।

- सुभाष आर्य, सिलिगुड़ी

Sir u put a mile stone in the history of Arya samaj and Udaipur. Great. many many congratulations. आपने ऋषि को और भारतीय संस्कृति को इस युग में पुनर्जीवित कर दिया है। - देवेन्द्र शेखावत, चित्तौड़

## विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

**मैं पूनम बंसल दिल्ली से अपने परिवार सहित पहली बार नवलखा महल के बारे में जानने आई हूँ और स्वामी दयानन्द जी की आत्मकथा को जान पाई। यहाँ के गाइड ने हमें श्रीराम जी, हनुमान जी, श्री कृष्ण के और स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में बहुत सुन्दर तरीके से वर्णन किया है। अपने हिन्दू धर्म में संस्कार के माध्यम से सन्तान उत्पत्ति से लेकर उसके वृद्धावस्था तक का वर्णन संस्कार वीथिका के माध्यम से बहुत अच्छे तरीके से किया गया है। मिनी थियेटर में हमारे मराठा राजाओं का चित्रण बहुत अद्भुत है।**

- पूनम बंसल; दिल्ली

**मैं संतोष कपूर अपने बेटे अम्बेश कपूर उनके बच्चों और बेटी अनुश्री खरबंदा व उसकी पुत्री के साथ यहाँ आई। यहाँ आकर न्यास द्वारा किया गया महान् कार्य देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। स्वामी जी के कार्यों और सत्यार्थ प्रकाश से सम्बन्धित इतनी सुन्दर व्यवस्थित और दर्शनीय जानकारी दी गई है कि आगन्तुक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने बहुत स्नेहपूर्वक हमारा मार्गदर्शन किया। हम सबके बहुत आभारी हैं। न्यास के कार्यक्रमों के लिए हमारी शुभकामनाएँ।**

- संतोष कपूर; प्रधाना-आर्य समाज, टैगोर नगर, नई दिल्ली

**नवलखा महल में संस्कार वीथिका के माध्यम से जन्म से लेकर मृत्यु तक के १६ संस्कारों के बारे में बड़े ही सरल दृश्यों में चित्रण किया गया है। महाराणा प्रताप के द्वारा संघर्ष को बहुत अच्छे से चलचित्र द्वारा दर्शाया गया है और अपने वेदों, उपनिषदों का भी सरल चित्रण दिया गया है। यहाँ आकर मन को बहुत प्रसन्नता हुई। सभी को एक बार यहाँ जरूर आना चाहिए।** - प्रवीण शर्मा

जैसा कि आप सब जानते हैं कि आर्यसमाज शब्द का शब्दार्थ है- श्रेष्ठों=अच्छों का संगठन अर्थात् जो वेदादि शास्त्रों में प्रतिपादित विचारों, मन्तव्यों, सिद्धान्तों के प्रचार के लिए बनाया गया है। जिसके द्वारा संसार में आर्यता का प्रसार हो और जिससे सभी सफल-सुखी हो सकें। इस सबके परिचय के लिए जहाँ महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि जैसे विशेष ग्रन्थ बनाये, वहीं आर्योद्देश्यरत्न माला, स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश सदृश लघुग्रन्थ भी प्रकाशित किये। इनमें वेदादि शास्त्रों के निचोड़ को सारगर्भित शब्दों द्वारा जीवन से जुड़ी सभी बातों का सम्पूर्ण परिचय (अतिसंक्षिप्त रूप में समाया) है। उदाहरण की दृष्टि से अध्यात्म के ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष आदि। धर्म की दृष्टि से धर्म, स्वर्ग, तीर्थ, व्रत जैसे। यहाँ केवल ईश्वर पर ही विचार करते हैं।

# आर्यसमाज और ईश्वर

**ईश्वर**- शब्द का अर्थ है- स्वामी, मालिक, नियन्त्रक। भगवान का सामान्य भाव है- अनेक तरह का ऐश्वर्य वाला। वेद आदि सभी शास्त्रों में संसार के उत्पादक, पालक, व्यवस्थापक आदि (गुण, कर्म के कर्त्ता) को ईश्वर भगवान आदि नाम से स्मरण किया है। क्योंकि जिन भौतिक पदार्थों को हम प्रतिदिन अपने व्यवहार में लाते हैं। उनमें से अधिकतर ऐसे हैं, जिनको हमारे जैसे कारीगर बनाते हैं। हाँ, इनके जो लकड़ी, लोहा जैसे कच्चे माल हैं और जितने भी सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, धरती सदृश प्राकृतिक पदार्थ हैं उनको हमारे जैसा कोई बनाता चलाता दिखाई नहीं देता। निःसन्देह उन पदार्थों को बनाता हुआ, कोई चाहे दिखाई न दे पर इनकी कार्य प्रक्रिया, चालन व्यवस्था, परिवर्तन, विकार की स्थिति यह अनुमान करा देती है, कि ये सब भी किसी कर्त्ता की कृति, रची हुई रचना अवश्य हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विविध रचनाओं के साथ आर्यसमाज के पहले एवं दूसरे नियम में भी जहाँ ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाली दो युक्तियाँ दी हैं। वहाँ द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप, गुणों का परिचय दिया गया है। इनका अन्तिम शब्द है- सृष्टिकर्त्ता अर्थात् उत्पन्न होने वाले को करने बनाने वाला। इस नियम के अन्तिम अंश (उसी की ही उपासना करनी चाहिए) में इस संसार से लाभ लेने वालों को सन्देश दिया है कि ईश्वर की कृतज्ञता (किये हुए उपकारों) को स्वीकार करते हुए उसकी उपासना (अर्थात् उससे जुड़ने, उसका अनुभव करने का यत्न) करना चाहिए। तभी ऐसा करने पर व्यक्ति में आत्मिक बल, सन्तोष, शान्ति उभरती है।

**भक्ति**- इसका सबसे सरल ढंग यह है कि प्रातः शौच आदि दैनिक आवश्यक कृत्यों से निपट कर 'ओ३म्' का गुंजार करें। इसकी सीधी प्रक्रिया यह है कि ईश्वर के अधिक से अधिक 'स्वरूप' के बोधक सर्वोत्तम नाम 'ओ३म्' को लम्बी सांस के साथ थोड़ा सा मुख खुला रखते हुए होठों से दीर्घ स्वर के साथ ओ३म् की गुंजार करें। इस गुंजार के साथ ही साथ मन में ओ३म् वाच्य ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन, ध्यान करें। इस प्रकार एक

गुंजार के पश्चात् थोड़ा उठकर पुनः ओ३म् की गुंजार करें। ओ३म् एक प्राकृतिक, स्वाभाविक ध्वनि है। अतः श्वास के साथ आप इसको जितना भी दीर्घ, लम्बा, गहरा करना चाहें सरलता से कर सकते हैं। इसीलिए इसको उद्गीथ प्राणायाम कह सकते हैं। तब ऐसी स्थिति में 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार प्रभु भक्ति के साथ ही

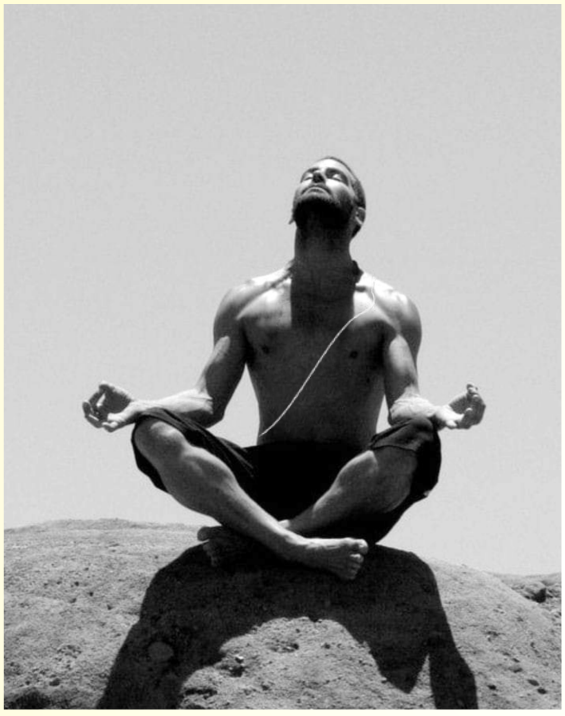

शरीर की आरोग्यता, स्वस्थता, सुदृढ़ता का भी यह एक अचूक साधन बन जाता है।

उपासना को ही पूजा, भक्ति, अर्चना, वन्दना आदि भी कह दिया जाता है। उपासना की दृष्टि से यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है, कि ईश्वर सर्वव्यापक के साथ नित्य भी है। नित्य का भाव होता है- सदा रहने वाला। ईश्वर की नित्यता का भाव है, कि वह सदा-सर्वत्र, एकरस, एक रूप, निर्विकार है। अर्थात् वह एक ऐसा अभौतिक पदार्थ तत्व है, जिसमें किसी प्रकार का कैसा भी परिवर्तन विकार नहीं होता न ही आता है। अर्थात् एक जीवित चेतन सत्ता है वह। अतः आर्य समाज मानता है कि ईश्वर की उपासना किसी विशेष स्थान पर किसी विशेष रूप को सजाकर और किसी विशेष प्रकार के वस्त्रादि पहना कर किसी भौतिक वस्तु को देखकर और न ही इसके लिए लम्बी-लम्बी यात्राएँ करके न ही घण्टों लाईनों में खड़े होने की जरूरत है। क्योंकि वह नित्य, सर्वव्यापक ईश्वर हमारे हृदयों में सदा विराजता है। अतः केवल दिल की भावनाओं के साथ याद करने, जुड़ने की जरूरत है। 'अपना प्रभु अपने दिल में है' भावना से भरने की ही जरूरत है।'

**ईश्वर स्वरूप-** आइए! अब कुछ ईश्वर के स्वरूप पर भी विचार कर लें। ईश्वर का एक मुख्य गुण सर्वव्यापक है। सर्वव्यापक होने से वह स्वतः सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वेश्वर, सर्वाधार, सर्वकर्त्ता आदि गुण युक्त है। सर्वव्यापक संख्या में एक ही होता है। दो होने पर व्यापकता बंट जाएगी। ऐसे ही सर्वव्यापक निराकार ही होता है, क्योंकि एकदेशी ही साकार होता है।

कर्त्ता द्वारा की जाने वाली क्रिया तभी होती है जब उसके साथ कर्त्ता का सम्बन्ध होता है, वहाँ उसका अस्तित्व होता है। संसार रूपी रचना सब जगह चल रही है। अतः उसका कर्त्ता सब स्थानों पर होने से स्वतः सर्वव्यापक सिद्ध हो जाता है। तभी वह वहाँ-वहाँ प्रकृति को प्रेरणा देकर जगत् रचता है। सर्वव्यापक होने से जब जहाँ जो कुछ होता है, वह उस उसको अपनी सर्वज्ञता से जानता है। अतः कोई कभी-कहीं भी कुछ उससे छिपा नहीं सकता। अतएव वह प्रत्येक के सभी कर्मों का यथासमय यथायोग्य जानता और कर्मफल देता है। अतः यह भ्रम पालना सर्वथा निरर्थक है, कि हम ऐसे ऐसे यह बात छिपा लेंगे या इससे ऐसे बच जायेंगे।

किसी बात की परीक्षा, जाँच सच्चाई से होती है और सच्चाई का पता कार्य-कारण के नियम से ही होता है। अतः जिस ढंग से, जैसे साधनों से, जिस स्थिति में आपस के तालमेल द्वारा जो कार्य सफल होता है, उसी को ही उस कार्य का कारण कहा जाता है। जैसे कि रसोई में प्रत्येक तैयार होने वाला पकवान इस दृष्टि से स्पष्ट है। ठीक ऐसे ही ईश्वर की सत्ता की सिद्धि के लिए संसार को बनाने-चलाने वाले के रूप में युक्ति दी जाती है। अतः जिस स्वरूप गुण वाला ईश्वर ऐसा कर सके। वह ही ईश्वर का स्वरूप है। इसीलिए ऊपर की चर्चा में ईश्वर के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए सर्वव्यापक शब्द के विचार में यह सब दर्शाया गया है।

**लेखक- आचार्य भद्रसेन**
**दर्शनाचार्य; होशियारपुर**

# स्वास्थ्य



## वर्षा ऋतु

भारतीय प्राचीन मनीषियों के अनुसार श्रावण व भाद्रपद मास (१६ जुलाई से १५ सितम्बर) का समय वर्षा ऋतु के अन्तर्गत आता है। ग्रीष्म ऋतु में शीत पदार्थों के सेवन से संचित वायु इस ऋतु में प्रकुपित होकर वात प्रधान व्याधियों को उत्पन्न करता है। चरक संहिता में लिखा है- **'वर्षासु वातिकाश्चैव प्राय: प्रादुर्भवन्ति हि।'** ग्रीष्म ऋतु से चली आ रही मन्दाग्नि इस ऋतु में भी बनी रहती है। इस ऋतु में नदी तालाब में स्नान करना वर्जित है। धूप से बचना चाहिए क्योंकि वात-पित्त के प्रकोप से ज्वरादि के होने की सम्भावना बनी रहती है। इस ऋतु में रात्रि में भोजन करने का निषेध है क्योंकि भोजन के समय विषैले जीव-जन्तुओं का भोजन में गिरने का भय रहता है। इस ऋतु में दिन में सोना, ओस में सोना, व्यायाम, धूप का सेवन, रूखा भोजन और अधिक मैथुन वर्जित है। वर्षा जल में अधिक नहीं भीगना चाहिए। इस मौसम में पाचनशक्ति निर्बल होने के कारण शीघ्र पचने वाला भोजन दलिया आदि खाना चाहिए। चावल का अधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए। हरी सब्जियाँ विशेष लाभदायक हैं, परन्तु इनको भली-भाँति देखकर धोकर प्रयोग करना चाहिए।

हरी सब्जियों में भिण्डी, नेनुआ, परवल, टिण्डा, बैंगन, करेला, कद्दू, लौकी, तुरई, कच्चा केला, पालक आदि विशेष हितकारी हैं। पाचक रसों को उत्पन्न करने वाले नींबू, अदरक, मूली, करौंदा, लहसुन, प्याज, हरीमिर्च, सिरका, काली मिर्च, पीपल, जीरा, हींग, अजवाइन, राई, मेथी, नमक आदि होते हैं। जो लोग मन्दाग्नि से पीड़ित हैं व उदर रोगी हैं उन्हें अदरक, मूली, लहसुन, हरीमिर्च कूटकर उसमें नींबू का रस निचोड़कर व काला नमक डालकर प्रतिदिन भोजन के साथ खाना चाहिए। इससे आमाशय सम्बन्धित अनेक रोग ठीक होते हैं। फलों में कलमी आम व पकी जामुन खानी चाहिए। गरिष्ठ भोजन जैसे रबड़ी, पेड़ा, मालपूआ, पूड़ी, कचौरी आदि नहीं खानी चाहिए। सरसों के तेल की मालिश हितकर है।

इस ऋतु में दिन में सोने से कफ व वायु दोष बढ़ते हैं, जिससे जुकाम, ज्वर, खांसी आदि रोग हो जाते हैं, अत: दिन में नहीं सोवें। यह ऋतु रोगोत्पत्ति के अनुकूल वातावरण वाली होती है, अत: देहशुद्धि करते हुए दोषों का निर्हरण करने से रोगोत्पन्न होने की सम्भावना नहीं रहती। इस हेतु निशोथ, इन्द्रजौ, पीपल, सौंठ इनका समभाग चूर्ण शहद या मुनक्का (द्राक्ष) के काढ़े के साथ लेने से संचित दोषों का निर्हरण विरेचन द्वारा हो जाता है। वर्षा के प्रारम्भ काल में ही ऐसा करना ठीक रहता है। प्रारम्भ में यह सप्ताह में तीन बार लेवें।

### वर्षा ऋतु के प्रमुख रोग

इस ऋतु में अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होती है। इसमें चर्मरोग, ज्वर, वातरोग तथा अनेक प्रकार की आगन्तुक व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं। चर्म रोगों में फोड़े-फुंसी व विषैले कीटाणुओं के दंश से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। उदर रोगों में आंव आना, पतले दस्त, पेट दर्द, अरुचि, मन्दाग्नि आदि हो जाते हैं। चर्म रोग हेतु नीम के पत्ते पानी में उबालकर उससे भली-भाँति शरीर शुद्धि (स्नान) करनी चाहिए, या नीम के साबुन से स्नान करें। उदर रोगों में लवण भास्कर चूर्ण, हिंग्वष्टक चूर्ण भोजन के बाद खाने से विशेष लाभ मिलता है। अथवा अजवायन गर्म जल के साथ ले सकते हैं। ईसबगोल की भूसी देशी शक्कर के साथ व गूलर के पत्तों को जल में पीस कर पीने से लाभ होता है। ज्वर में तुलसी के पत्ते, अदरक व कालीमिर्च का काढ़ा हितकर है। महासुदर्शन घनवटी और गिलोय घनवटी की ३-३ गोली सुबह-शाम जल से लेने से निरन्तर रहने वाला ज्वर ठीक हो जाता है। वात रोगों में सिर, हाथ, पैर व पीठ में दर्द प्राय: होता है, इसके लिए महायोगराज गूगल की २-२ गोली महारास्नादि काढ़े के साथ लेने व महानारायण तैल, महाविषगर्भ तैल की मालिश करने से लाभ हो जाता है। पतले दस्त व मरोड़ में कुटजारिष्ट १० से २० ml सुबह-शाम लेने से लाभ हो जाता है।

### वर्षा ऋतु में हरीतकी (हरड) प्रयोग

हरीतकी को आयुर्वेद में रसायन कहा है। छोटी हरड़ का चूर्ण कपड़छन करके चतुर्थांश सैंधा नमक मिलाकर ४ ग्राम की मात्रा में रात्रि के समय गर्म पानी के साथ लेने से कब्ज, कफ वाली खांसी, बवासीर, पेट दर्द, भूख न लगना आदि रोग ठीक होते हैं। इसे १० से २० दिन तक नियमित लेवें।

### यज्ञ चिकित्सा

वर्षा ऋतु में वातावरण में नमी की अधिकता के कारण अनेक प्रकार के रोगोत्पादक जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं। ऋतु अनुकूल हवन सामग्री से यज्ञ करने से वातावरण रोगाणु रहित होने से अनेक रोग उत्पन्न ही नहीं हो पाते, यदि रोग हो जाते हैं तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो जाता है। वर्षा ऋतु में निम्न द्रव्यों से युक्त हवन सामग्री से हवन करना चाहिए।

काला अगर, पीला अगर, जौ, चीड़, धूप, सरसों, तगर, देवदारु, गुग्गुलु, नकछिकनी, राल, जायफल, मुण्डी, गोला, निर्मली, कस्तूरी, मखाने, तेजपत्र, कपूर, वनकूचर, बेल, जटामांसी, छोटी इलायची, बच, गिलोय, तुलसी के बीज, वायविडंग, कमल मुण्डी, शहद, श्वेत चन्दन का चूरा, ऋतु फल, नागकेशर, ब्राह्मी, चिरायता, उड़द के लड्डू, छुहारे, शंकाहोली, मोचरस, विष्णुकान्ता, ढ़ाक की समिधा, गोघृत, खांड, भात।

- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त, वरिष्ठ चिकित्सा शोधकारी
१३, श्रीराम नगर, हिरणमगरी, सेक्टर- ६, उदयपुर

# कहानी दयानन्द की

# कथा सरित

'यह योग नहीं है, मैं इस विचित्र क्रिया को योग नहीं मान सकता।' यह बात युवा संन्यासी दयानन्द रामगिरि नाम के एक साधु के शिष्य को बोल रहे थे। वस्तुतः चिल्किया घाट के पार रामपुर में यह रामगिरि नाम का एक अद्भुत साधु रहता था। यह पूरी रात्रि सोता नहीं था अपने आप से बातचीत करता रहता था और कभी रोने लग जाता था। सारे लोग इनको इसी कारण परम योगी मानते थे। परन्तु रामगिरी के साथ बात करने पर स्वामी दयानन्द को यह निश्चय हुआ यह कोई योग क्रिया नहीं थी बल्कि रामगिरि तो योग की एकाध क्रिया भी नहीं जानते थे। यह निश्चय हुआ कि उस समय में भी स्थिति यही थी कि वास्तविक योग में निष्णात् और योगाभ्यास करने वाले विरले ही थे जिनकी खोज दयानन्द कर रहे थे। और अभी तक कुछ लोगों, विशेषकर ज्वालानन्द गिरि, शिवानन्द गिरि को छोड़कर इन्हें कोई योगी मिला ही नहीं था।

हिमाच्छादित पर्वत की ऐसी कौन सी चोटी थी, जहाँ तक की दौड़ इस युवा साधु ने ऐसे योगियों का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए नहीं लगाई थी? कौन सी ऐसी बर्फानी नदी थी जिस के पानी को दयानन्द के चरणों ने स्पर्श नहीं किया? कौन सी ऐसी गुफा थी जिस में झांक कर दयानन्द ने न देखा हो? बड़े-बड़े मठ और मन्दिरों को भी देख लिया, उनके संचालकों को भी देख लिया, परन्तु दयानन्द की योग पिपासा और ज्ञान की प्यास शान्त नहीं हुई।

अतः अब उन्होंने मैदानी इलाके में आकर के अनुसंधान का निश्चय किया। उनका निश्चय था कि नर्मदा नदी के स्रोत को देखा जाय। पर क्या यह यात्रा सरल थी?

ऊपर हाड़ कंपाती बर्फ का साम्राज्य था तो नर्मदा तट पर कंटकाकीर्ण वनों का। जगह-जगह हिंसक पशु।

भयानक रीछ के आक्रमण को उन्होंने निडरता के साथ अपना सोटा उसको दिखा करके निरस्त कर दिया। परन्तु अभी बाधाएँ बाकी थीं। वहाँ के घने जंगलों के बारे में स्वयं स्वामी जी ने लिखा 'असंख्य फूल के वृक्षों और अनेक प्रकार की कटीली झाड़ियों से वह जंगल भरा हुआ था उसमें से किसी ओर भी निकलने का उपाय नहीं था वहाँ से छुटकारा पाना मेरे लिए कठिन हो गया कुछ दूर तक बैठे-बैठे कुछ दूर तक घुटनों के बल चलना पड़ा थोड़ी देर के पश्चात् यद्यपि मैंने अपने को इस नई विपत्ति से मुक्त तो कर लिया, परन्तु मेरे वस्त्र धज्जी-धज्जी हो गए और कांटे लगने से मेरे शरीर के बहुत से स्थानों से रक्त की धारा बहने लगी।'

इस सबसे यह बात भी स्पष्ट होती है कि कोई दयानन्द जैसा धुन का धनी ही सत्य को प्राप्त करने के लिए

ऐसे कष्टों को सहन कर सकता है अन्यथा तो सुविधापूर्ण मठों, मन्दिरों और आश्रमों की उस समय कोई कमी नहीं थी।

यहाँ से हम देखते हैं कि लगभग ३ वर्ष के पश्चात् मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटी पर दयानन्द जी पधारते हैं। परन्तु इससे ३ वर्ष पूर्व का जो समय है उस समय दयानन्द ने क्या किया? वह कहाँ रहे? यह पता नहीं चलता। पण्डित लेखराम जी ने लिखा है कि इस सारे समय में वे नर्मदा नदी के किनारे भ्रमण करते रहे। परन्तु दयानन्द जैसा सत्य का पिपासु, क्रान्तिकारी विचारधारा का धनी, इस बीच कोई ऐसा उल्लेखनीय कार्य नहीं कर पाया अथवा किसी उल्लेखनीय व्यक्तित्व से भेंट नहीं कर पाया, जिसकी चर्चा होती, ऐसा स्वीकार करना कठिन ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी कारणवश अपनी गतिविधियों को गुप्त रखते रहे। कोई न कोई कारण थे जिनके चलते स्वामी जी ने स्वयं इस काल की चर्चा नहीं की और उनके जीवन की खोज करने वाले रक्तसाक्षी पण्डित लेखराम जी आदि को भी कोई सामग्री नहीं मिल पाई। यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण काल था, जब अंग्रेजों की सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम प्रारम्भ होने की स्थिति में था और उसके बाद का काल भी इससे सम्बन्धित हलचल के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण था। कभी-कभी ऐसा लगता है कि निश्चित रूप से १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानन्द जी का कोई ना कोई भाग रहा होगा, परन्तु इसे प्रमाण पुरस्सर तरीके से आर्य समाज के इतिहासकार नहीं रख पाए। इसीलिए इस सम्बन्ध में आर्य समाज का प्रामाणिक मत यही है कि यह काल हमारे लिए और सम्पूर्ण संसार के लिए अज्ञात ही है। जबकि कर्नल टाड, गौरीचन्द ओझा आदि इससे सहमत नहीं।

एक बात अवश्य है आर्य विद्वानों ने जहाँ स्वामी जी के प्रत्येक दिन का विवरण कि वे उस दिन कहाँ थे? उनकी गतिविधियाँ क्या थी? यह सब अंकित कर ली हैं, वहाँ उनके जीवन-चरित्र के सन्दर्भ में यह काल अदृश्य हो जाना एक बहुत बड़ी कमी न केवल इतिहास के विद्यार्थियों के समक्ष बल्कि समस्त संसार के समक्ष प्रतीत होती है। क्या ही अच्छा होता कि इस अति महत्वपूर्ण काल तथा इस समय में स्वामी जी की गतिविधियों के बारे में इतिहासकार संसार को परिचित करा पाते।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

■■■

## संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

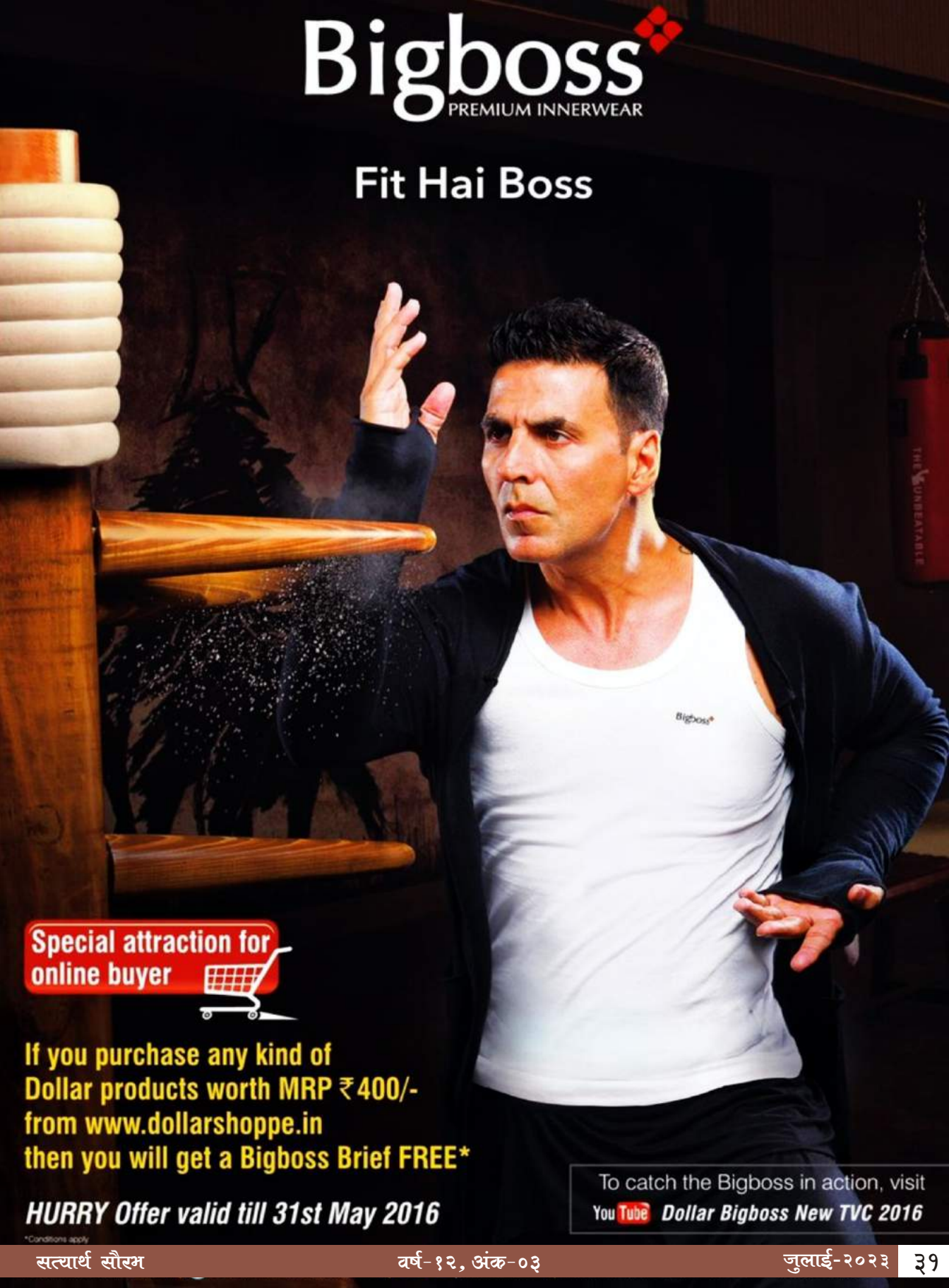

Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Special attraction for online buyer
If you purchase any kind of Dollar products worth MRP ₹400/- from www.dollarshoppe.in then you will get a Bigboss Brief FREE*
HURRY Offer valid till 31st May 2016
*Conditions apply
To catch the Bigboss in action, visit
YouTube Dollar Bigboss New TVC 2016

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

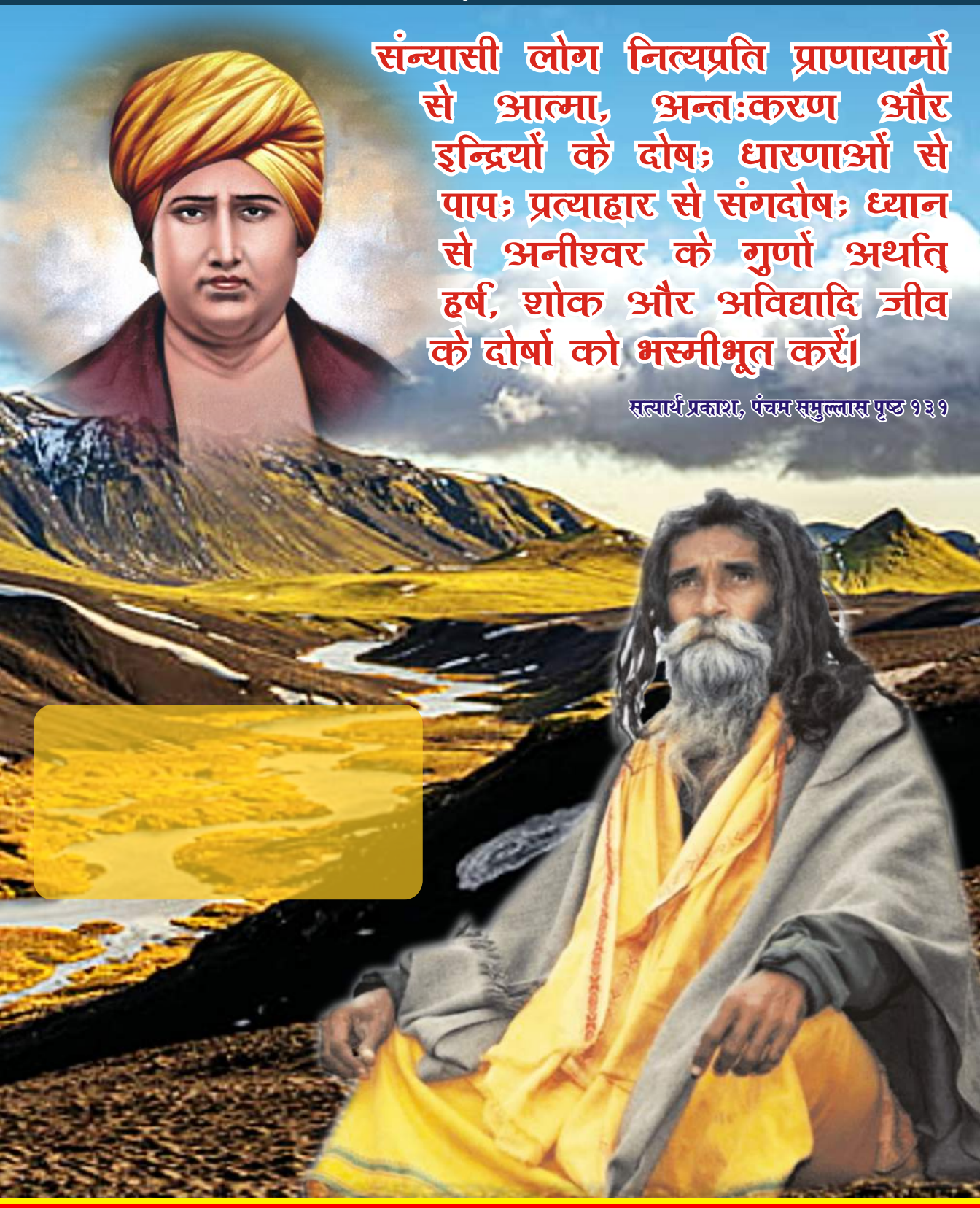

# संन्यासी लोग नित्यप्रति प्राणायामों से आत्मा, अन्तःकरण और इन्द्रियों के दोष; धारणाओं से पाप; प्रत्याहार से संगदोष; ध्यान से अनीश्वर के गुणों अर्थात् हर्ष, शोक और अविद्यादि जीव के दोषों को भस्मीभूत करें।

सत्यार्थ प्रकाश, पंचम समुल्लास पृष्ठ १३१

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर